thearyasamaj.org

छत्तीसगढ़ प्रान्तीय आर्य प्रतिनिधि सभा
हिन्दी मासिक मुख पत्र
मास-चैत्र-वैशाख, संवत् 2072
अप्रैल 2015

ओ३म्

अंक 117, मूल्य 10

अग्निदूत

अग्निं दूतं वृणीमहे. (ऋग्वेद)

महात्मा हंसराज

हुतात्मा महाशय राजपाल

thearyasamaj.org

महाशय धर्मपाल (एम.डी.एच. मसाला) के 92वाँ जन्म दिवस के अवसर उपस्थित छत्तीसगढ़ प्रान्तीय आर्य प्रतिनिधि सभा के पदाधिकारी

thearyasamaj.org

अग्निदूत

हिन्दी मासिक

राष्ट्रीय, सामाजिक, सांस्कृतिक, धार्मिक, राजनीतिक विचारों की मासिक पत्रिका

वर्ष - १०, अंक १० ओ३म् मास/सन् - अप्रैल - २०१५

विक्रमी संवत् - २०७२
सृष्टि संवत् - १,९६,०८,५३,११६
दयानन्दाब्द - १९१

श्रुतिप्रणीत-सिद्धधर्मवह्निरूपतत्त्वकं,
महर्षिचित्त-दीप्त वेद-सारभूतनिश्चयं।
तदग्निसंज्ञकस्य दौत्यमेत्य सद्मसद्मकम्,
सभाग्निदूत-पत्रिकेयमादधातु मानसे।।

: प्रधान सम्पादक :
आचार्य अंशुदेव आर्य
प्रधान सभा
(मो. ०७०४९२४४२२४)

★

: प्रबंध सम्पादक :
आर्य दीनानाथ वर्मा
मंत्री सभा
(मो. ९८२६३६३५७८)

★

: सहप्रबंध सम्पादक :
श्री अवनीभूषण पुरंग
कोषाध्यक्ष सभा
(मो. ९८९३०६३९६०)

★

: व्यवस्थापक :
श्री दिलीप आर्य
उपमंत्री (कार्यालय) सभा
मो. ९६३०८०१२५७

★

: सम्पादक :
आचार्य कर्मवीर
मो. ९७५२३८८२६७

पेज सज्जक : श्रीनारायण कौशिक
वरि.प्रबधंक : श्री रामेश्वर प्रसाद यादव

- कार्यालय पता -
छत्तीसगढ़ प्रान्तीय आर्य प्रतिनिधि सभा
दयानन्द परिसर, आर्य नगर, दुर्ग (छ.ग.)४९१ ००१
फोन : (०७८८)२३२२२२५, ४०३०९७२
फैक्स नं. : ०७८८-४०११३४२;
e-mail : chhattisgarhsabha@gmail.com

वार्षिक शुल्क - १००/- दसवर्षीय-८००/-

विषय - सूची

			पृष्ठ क्र.
१.	वेदामृत : सोम का रस	स्व. डॉ. रामनाथ वेदालङ्कार	०४
२.	सम्पादकीय :सही अर्थों में शिक्षा क्या हो ?	आचार्य कर्मवीर	०५
३.	हम क्यों भटक रहे हैं ?	शिव कुमार शास्त्री	०७
४.	बेटी का जीवन बचाएँ	डॉ. बिजेन्द्र पाल सिंह	१०
५.	वैदिक विज्ञान में एक आधुनिक ऋषि- 'महर्षि दयानन्द सरस्वती'	श्री कृपाल सिंह वर्मा	१२
६.	महाभारत में व्रत चिन्तन	महात्मा चैतन्यमुनि	१५
७.	रेल्व एवं केन्द्रीय बजट-२०१५-१६- मध्यम वर्गीय के लिये दण्ड	अधि. सत्यप्रकाश आर्य	१८
८.	हमारे माता-पिता और परमात्मा	मनमोहन कुमार आर्य	२०
९.	''माँ, कभी नहीं मरती''	देवेन्द्र कुमार मिश्रा	२३
१०.	पुण्य स्मरण : हुतात्मा महाशय राजपाल की बलिदान गाथा	विश्वनाथ	२७
११.	प्रेरक जीवन - महात्मा हंसराज	डॉ. अशोक आर्य	२९
१२.	परीक्षा में अधिक अंक लाने के उपाय	स्वामी शान्तानन्द सरस्वती	३०
१३.	होम्योपैथिक से सम्पूर्ण रोगों का उपचार	डॉ. विद्याकान्त त्रिवेदी	३१
१४.	समाचार दर्पण		३२

सूचना : छत्तीसगढ़ प्रान्तीय आर्य प्रतिनिधि सभा का अणुसंकेत
(ई-मेल) E-mail : chhattisgarhsabha@gmail.com
(सम्पादक) E-mail : shastrikv1975@gmail.com

सूचना : हमारा नया वेब साइट देखें
Website : http:/www.cgaryapratinidhisabha.com

लेख में प्रकट किए विचारों के लिए सम्पादक उत्तरदायी नहीं है।

सम्पादक प्रकाशक मुद्रक आचार्य अंशुदेव आर्य द्वारा उषा प्रिन्टर्स, मॉडल टाऊन भिलाई से छपवाकर छत्तीसगढ़ प्रान्तीय आर्य प्रतिनिधि सभा, दयानन्द परिसर, आर्यनगर, दुर्ग से प्रकाशित किया गया।

thearyasamaj.org

सोम का रस

भाष्यकार - स्व. डॉ० रामनाथ वेदालङ्कार

स्वादुष्किलायं मधुमाँ उतायं, तीव्रः किलायं रसवाँ उतायम्।
उतो न्वस्य पपिवांसमिन्द्रं, न कश्चन सहत आहवेषु ॥

ऋषिः **गर्गः भारद्वाजः** । देवता **सोमः** । छन्दः **त्रिष्टुप्** ।

● **(अयं)** यह (सोम रस) **(किल)** निश्चय ही **(स्वादुः)** (है), **(उत)** और **(अयं)** यह मधुमान् मधुर (है)। **(अयं)** यह **(किल)** निश्चय ही **(तीव्रः)** तीव्र (है,) **(उत)** और **(अयं)** यह **(रसवान्)** रसीला (है)। **(उतो)** और (नु) सचमुच **(अस्य)** इसके **(पपिवांसं)** पीनेवाले को **(कश्चन)** कोई भी **(आहवेषु)** संग्रामों में (न) नहीं **(सहते)** पराजित कर सकता है।

● **प्रा**चीन काल में एक सोम-लता होती थी, जिसके पत्तों और डंठलों का रस दूध, जौ के पानी या अन्य औषधियों के रस के साथ मिलाकर पान किया जाता था। इस लता में पन्द्रह पत्ते होते थे, जिसकी ह्रास-वृद्धि चन्द्र-कलाओं की ह्रास-वृद्धि के साथ होती थी। पूर्णिमा को लता पूरे पत्तों के साथ लहलहाती थी और अमावस को पत्र-विहीन हो जाती थी। आयुर्वेद के ग्रन्थ सुश्रुत में इस लता का वर्णन मिलता है तथा वहां इसके अंशुमान, रक्तप्रभु, मुञ्जवान् आदि चौबीस भेद तथा हिमालय, अर्बुद, सह्य, महेन्द्र, मलय पर्वत आदि उत्पत्ति स्थान भी परिगणित है। यज्ञों में इसका उपयोग प्रचुर रुप में होता था, किन्तु इसकी कृत्रिम उपज संभव न थी, या उस समय इस ओर ध्यान नहीं दिया गया। अतः आजकल यह लता खोज का विषय बनी हुई है। मन्त्र में इस सोम के रस का पान करने वाला स्तोता इसके स्वाद, इसकी तीव्रता तथा इसके रसीलेपन का वर्णन कर रहा है, और कह रहा है कि इसके पीने वाले को संयमों में कोई पराजित नहीं कर सकता।

यह तो बाह्य सोम की गाथा। किन्तु इसके भिन्न एक अन्य सोम भी है, जिसे हम ब्रह्म नाम से जानते हैं। उस परब्रह्म रुप सोम से साधक के आत्मा में प्रस्तुत होने वाला ब्रह्मानन्द भी सोम-रस है। उस दिव्य रस का वर्णन करता हुआ साधक कह रहा है - अहो, यह कैसा स्वादु है! इसके स्वाद के सम्मुख सब सांसारिक स्वाद फीके हैं। अहो, यह कैसा मधुर है! इसकी मधुरिमा के आगे सब भौतिक माधुर्य नगण्य है। अहो, यह कैसा तीव्र है! पान करते ही शरीर, प्राण, मन, बुद्धि और आत्मा में अद्भुत स्फूर्ति उत्पन्न कर देता है। अहो, यह कैसा रसीला है! इसके रसीलेपन की तुलना में सब भौतिक रस तुच्छ है। जो आत्मा इसका पान कर लेता है, उसे अन्तःकरण में चल रहे देवासुर-संग्रामों में कोई काम, क्रोध, लोभ, मोह आदि असुर परास्त नहीं कर सकता। ब्रह्मानन्द-रुप सोम की रसीली धार का पान कर उसके अन्दर ऐसे दिव्य अध्यात्म-बल का उदय हो जाता है कि वह संघर्ष में सब दुर्दान्त मायावी आन्तरिक रिपुओं को पराजित कर विजयी होता है। उसका आन्तरिक राष्ट्र तमोविहीन और निष्कंटक होकर स्वच्छ, समर्थ और ज्योतिष्मान् हो जाता है। आओ, हम भी उस दिव्य सोम-रस का आस्वादन कर स्वयं को आप्लावित, संतृप्त और कृतकृत्य करें।

संस्कृतार्थ :- १. आहव संग्राम (निघं २.१७)। २. सुश्रुत, चिकित्सित स्थान, अध्याय २९।

thearyasamaj.org

सम्पादकीय

सही अर्थों में शिक्षा क्या हो ?

वर्तमान शिक्षा प्रणाली मानव को वैज्ञानिक, इंजीनियर, डाक्टर, न्यायाधीश, प्रशासक, शोध-कर्ता या विशेषज्ञ तो बना सकती है किन्तु मनुष्य बनाने में नितशं पंगु सिद्ध हुई है। किताबी या सैद्धान्तिक ज्ञान में भले ही व्यक्ति आधुनिक शिक्षा का सहारा लेकर अपने आप को चरम शिखर पर पहुंचा समझ ले पर व्यावहारिक और नैतिक ज्ञान में वह शून्य होता जा रहा है।

महात्मा गांधी जी कहा करते थे - "लिखे-पढ़े बिना मनुष्य का सम्पूर्ण विकास नहीं हो सकता ऐसा मानना बहम ही है। इसमें शक नहीं कि अक्षर ज्ञान से जीवन का सौन्दर्य बढ़ जाता है, परन्तु यह मान्य नहीं कि इसके बिना व्यक्ति का नैतिक, शारीरिक या आर्थिक विकास सम्भव न हो।" इसमें कोई शक नहीं, सरकारी स्कूलों-कालेजों से निकलने वाले छात्र धार्मिक शिक्षा में कोरे होते हैं। स्कूल व कालेज की शिक्षा डिग्री दिलवा सकती है चाहे वह येन-केन-प्रकारेण ही प्राप्त की जाती हो। अगर हमारे राष्ट्र से आध्यात्मिकता का दिवाला नहीं निकालना है तो धार्मिक और नैतिक शिक्षा को उतना ही महत्त्व देना होगा जितना अन्य विषयों को। यह सही है कि धर्म-निरपेक्ष राज भारत में अनेक धर्म और मत प्रचलित हैं परन्तु सत्य-अहिंसा, प्यार-करुणा, सहकार-सदाचार की त्रिवेणी किस वर्ग में नहीं बदली।

नैतिक शिक्षा आखिर कहां से प्राप्त हो ? शाला-कालेजों में तो इसका अभाव ही दिखता है। इस प्रश्न का प्रत्युत्तर विनोबा जी द्वारा अपने अनुभवों के आधार पर कही बात से स्वतः ही मिल जाता है। "बच्चे के लिए मातृ-शिक्षण से श्रेष्ठ कोई शिक्षण नहीं, उसके लिए मां में बहुत अधिक बुद्धिमता, शिक्षा का होना अनिवार्य नहीं, बस शुद्ध-चरित्र व ईश्वर भक्त माँ हो, इतना ही पर्याप्त है।" नैतिक शिक्षा पाठशालाओं की चार-दिवारी में सीमित नहीं हो सकती। नवोदित शिशु के लिए इन नैतिक गुणों की प्रथम पाठशाला उसका अपना घर, कुटुम्ब या परिवार ही है। प्राचीन आर्य संस्कृति और सभ्यता के मुख्य स्रोत संयुक्त-परिवार में नैतिक शिक्षा और आचरण के द्वारा बाल्यकाल से ही बालक के अचेतन मस्तिष्क व मानस-पटल पर नैतिक मूल्य स्वतः ही अंकुरित हो जाया करते थे, इसके लिए उसे अलग से पाठशाला जाने की आवश्यकता नहीं रहती थी। बालक की प्रवृत्ति अनुकरणप्रिय होती है, वह जैसा देखता है वैसा ही सीखता है। गीता में भगवान श्रीकृष्ण कहते हैं -

यद्यदाचरति श्रेष्ठस्तद्तदेवेतरो जनः। स यत् प्रमाणं कुरुते लोकस्तदनुवर्तते॥

अर्थात् अपने आसपास अगल-बगल अपने से बड़ों को देखकर ही छोटे उसका अनुकरण स्वतः करने लगते हैं। प्राचीन गुरुकुल शिक्षा पद्धति में आज की भांति डिग्री प्रधान शिक्षा न थी, वहां नैतिक शिक्षा, शिष्ट आचरण और व्यावहारिक ज्ञान पर विशेष ध्यान दिया जाता था। धर्मोपदेश और महान् व्यक्तियों के जीवन-चरित्रों

thearyasamaj.org

के माध्यम से बच्चों के मानस में नैतिकता कूट-कूट कर भर दी जाती थी। आज की भांति वहां न तो हड़तालें होती थीं, न शिक्षकों का अपमान और न पिटाई। गुरुकुल से निकले बालक अपने गुरुओं का जीवन पर्यन्त आदर करते थे। पर आज के बी.ए., एम.ए. और पी.एच.डी. की शिक्षा प्राप्त विद्यार्थियों में यह भाव लुप्त होता जा रहा है।

अब प्रश्न उठता है कि नैतिकता या नैतिक शिक्षा है क्या ? मोटे तौर पर नैतिकता का अर्थ स्वस्थ व्यक्तित्व-निर्माण की शैली है जिसे नैतिक मूल्यों से सम्बोधित किया जा सकता है। व्यावहारिक जीवन में नैतिक मूल्यों का आधार क्षमा, दया, सदाचार परोपकार, प्यार, सहकार, सत्य, अहिंसा आदि कर्म ही है। निष्कपट, निःस्वार्थ हृदय वाले कभी गलत कार्य करने को उतारू हों तो उसी क्षण उनकी अन्तरात्मा उन्हें ऐसा न करने का अनुदेश देती है, यही नैतिकता की अनुभुति है और यही क्षण नैतिक मूल्यों से ओत-प्रोत है और यही नैतिकता का एक सुनिश्चित मानदण्ड है। यद्यपि हमारा राष्ट्र विज्ञान और तकनीक के क्षेत्र में विकासोन्मुख है, किन्तु इसके साथ-साथ हमें मनुष्य की नैतिक उन्नति की ओर भी ध्यान देना होगा। किसी भी उन्नत राष्ट्र के विकास हेतु नैतिक मूल्यों का भी उतना ही महत्व है जितना वैज्ञानिक और तकनीकी उन्नति का। जिस राष्ट्र में अनुशासन, प्रेम, करुणा, सदाचार, सहकार, न्याय, निष्पक्षता, एकता और देश-प्रेम की भावना होगी वे राष्ट्र ही विकास के चरम शिखर पर पहुंच सकते हैं। इतिहास इस बात का गवाह है कि इस देश के अन्दर भी जब ये जीवन मूल्य जनजीवन पर एकाकार थे यहां की समृद्धि व संस्कृति संसार के सर्वोच्च्च शिखर पर थी जब से इन मूल्यों का अवमूल्यन हो रहा है परिदृश्य भी आप देख सकते हैं।

अगर हम राष्ट्र की वर्तमान परिस्थितियों पर नजर डालें तो इन सबका अभाव ही देखते हैं। आज हमारा राष्ट्र अनेक कुण्ठाओं और कल्मषों से घिरा हुआ है। अखबारों की सुर्खियों में अक्सर बलात्कार, हत्यायें, राष्ट्र-विखंडन के षड़यन्त्र, आपा-धापी, भ्रष्टाचार की खबरें देखने को मिल जाती है। यहां तक कि भाई-भाई के खून का प्यासा है, माँ, बहिन, पत्नी की अस्मत दिन-दहाड़े लुट जाती है, नारी अपने अस्तित्व को बचाने में असमर्थ है, स्वयं आदमी को आदमी से खतरा है। आखिर क्यों है यह सब ? इसलिए ना, कि आज मनुष्य में नैतिक आचरण का अभाव होता जा रहा है। उसे ठीक से नैतिक शिक्षा मिली ही नहीं। वह नैतिक मूल्यों को समझने में असमर्थ है। धर्म के नाम पर ही उसे साम्प्रदायिकता की बू आती है, धार्मिक शिक्षा ग्रहण करना तो अलग बात है। विडम्बना तो यह है कि आज लोगों ने मनमाने धर्म की परिभाषाएँ ही गढ़ ली है।

नैतिक शिक्षा के इस अभाव का कारण कौन है ? प्रशासन, समाज, शिक्षक या माता-पिता ? मोटे तौर पर देखा जाये तो इसके लिए वर्तमान परिस्थितियाँ ही उत्तरदायी है। पाश्चात्य प्रभावी वातावरण के दुष्प्रभाव को दूर गुरुकुल-पद्धति, संयुक्त परिवारों की प्रथा का प्रचलन किया जाये तो सुधार की आशायें की जा सकती है। यह उपचार सरल तो नहीं है, किन्तु इसके बिना आत्मिक शान्ति व व्यावहारिक जीवन संभव नहीं। आध्यात्मिक विकास ही नैतिक विकास की मंजिल है। राष्ट्र व्यक्तियों से मिलकर बनता है, अगर व्यक्ति नैतिक मूल्यों को जीवन में उतार लें तो शायद समूचा राष्ट्र ही नैतिक मूल्यों से परिपूर्ण हो जायेगा। यदि इस दिशा में अपने से थोड़ा भी प्रयत्न संभव हो सका तो यह जीवन की सार्थकता होगी।

– आचार्य कर्मवीर

thearyasamaj.org

उपादेयात्मक

हम क्यों भटक रहे हैं ?

शिव कुमार शास्त्री (पूर्व सांसद)

"श्री शिव कुमार शास्त्री जी भारतीय लोकसभा के दो बार सांसद रहे थे। वे प्रसिद्ध नेता एवं संस्कृत के सुयोग्य विद्वान् थे। उनके द्वारा लिखित यह लेख सन् १९८२ में गुरुकुल प्रभात आश्रम दशाब्दी समारोह पर प्रकाश्यमान स्मृति-ग्रन्थ दशाब्दी समारोह में प्रकाशित हुआ था। अतः उपयोगी समझकर इसे पुनः प्रसारित किया जा रहा है।"

अफ्रीका के हबशियों को जब अमेरिका की मण्डी में बेचने के लिए लाया जाता था। तब एक इंग्लिश लेडी 'मिस स्टो' ने एक बूढ़े की जीवनी को अंकल टोम्स केबिन (Uncle Tom's Cabin)नाम की पुस्तक के रुप में लिखा। उसे इस पुस्तक के लिखने पर जेल का दण्ड मिला, पर अन्त में उसके विचार विजयी हुए और हबशियों का बेचना बन्द हुआ।

इस पुस्तक में 'स्टो'ने कई बातें बहुत महत्वपूर्ण लिखी हैं। वह लिखती है कि "जो लोग पराधीन होते हैं, उनमें दो बातें बहुत शीघ्र पनपती है, पहली तो यह कि उन लोगों को अपने पहले खान-पान, रहन-सहन, चाल-चलन और जीवन के सभी दूसरे मार्गों तथा साधनों से घृणा होने लगती है। दूसरी यह कि अपने मालिकों के खान-पान, रहन-सहन, चाल-ढाल, बोल-चाल तथा जीवन के सभी साधनों में रुचि बढ़ने लगती है। उनकी दासता जितनी पुरानी होती जाती है ये दोनों बातें उनतनी गहरी स्थायी और सुदृढ़ होती जाती है। यदि इन दासों के लिये मालिकों की ओर से शिक्षा-दीक्षा का भी प्रबन्ध कर दिया जाये तो वे लोग इस शिक्षा के माध्यम से अपने आपको यहां तक बदल डालते हैं कि चमड़ी के बिना इनका पहचानना भी कठिन हो जाता है। ये अपनी सत्ता को, अपने अतीत जीवन को, अपने पुराने गौरव को यहां तक कि अपने बाप-दादों को भी भूलकर अपने को प्रत्येक बात में अपने स्वामियों के जीवन में बदलने के लिए यत्नशील रहते हैं, किन्तु ऐता दिन कभी नहीं आयेगा कि अपने मालिकों के साथ एकम-एक कर सकें।"

जो बातें इस देवी ने अपने गंभीर चिन्तन के पश्चात् लिखी है, उनकी यथार्थता को हम भारत के आज के ढर्रे को देखकर अनुभव कर सकते हैं। हमें भौतिक स्वान्त्र्य प्राप्त किए ३५ वर्ष हो गए, किन्तु मानसिक दृष्टि से हम अब भी दास हैं, अपितु वास्तविकता के उद्घाटन के लिए यह कहना अधिक सार्थक होगा कि दासता के रोग का उभार हमारी भौतिक स्वतन्त्रता के पश्चात् अधिक हुआ है। हम में अंग्रेजियत जितनी इन ३५ वर्षों में बढ़ी है, उतनी पले क १५० वर्षों में भी नहीं आयी। आज तथाकथित सुसंस्कृत और बड़े घरों में बच्चे जन्म से ही अंग्रेजी बोलते हैं। जितने अंग्रेजी के माध्यम वाले शिक्षणालयों की दुकान आज चमक रही है पहले कहाँ थी ? इन स्कूलों में अपने बच्चों को केवल प्रवेश दिलाने के लिए ही अभिभावकों को महीनों दौड़-धूप करनी पड़ती है। आज अपनी इस स्थिति पर कोई विचार करने को उद्यत नहीं है कि हम कहां जा रहे हैं ? हमारा क्या बनेगा ? और हमारी इस स्थिति को देखकर संसार के दूसरे देश हमारे विषय में क्या धारणा बनाते हैं ?

एक अमेरिकी पत्रकार श्री हैनरी सेंडर भारत में भ्रमण के लिए आये। भारत में भ्रमण करते हुए भारतीयों की स्थिति को देखकर जो प्रतिक्रिया उन पर हुई, वह अमेरिका में जाकर वहां के प्रसिद्ध पत्र <u>प्रौग्रेसिव</u> में उन्होंने लिखी। उनके लेख का अपेक्षित भाग इस प्रकार है - 'अंग्रेज के चले जाने के बाद भारत ३० वर्षों में झण्डे के सिवाय और कोई परिवर्तन नहीं आया है। ... भारतीय आपस में एक दूसरे के साथ जिस तरह व्यवहार करते हैं, उनमें भी उनके औपनिवेशक मस्तिष्क की झलक मिलती है। ... जब वे किसी भारतीय से ही बात करते हैं तो धीरे-धीरे उनका वार्तालाप अंग्रेजी में बदल जाता है। शायद भारतीय यह भूलना ही नहीं चाहते कि उन्हें उनके अंग्रेज शासकों ने लिखाया-पढ़ाया है। एक भारतीय व्यवहार

thearyasamaj.org

और आचरण में अपने को योरोपीय से घटकर ही मानता है। जब वह किसी योरोपीय के साथ बात करे या रहे तो वह अपने को योरोपीय नौकर सा मानता है। .. जब मैं भारत पहुंचा तो मैंने बराबर हिन्दी में बातचीत करने की कोशिश की। लेकिन मुझे लगा कि यह व्यर्थ ही है, क्योंकि भारतीय हिन्दी में बात करना अपना अपमान समझते हैं।'

यह है हमारे चिन्तन और व्यवहार की प्रतिक्रिया। हम भारतीयों के लिए इससे अधिक लज्जा की और कोई बात नहीं हो सकती। आश्चर्य तो यह है कि हमारे इन व्यवहारों के कारण विदेशों से हमारे राजनयिकों का अनेक बार अपमान भी हुआ, परन्तु हम है कि जो उस स्थिति को बदलने को उद्यत नहीं है। यह बड़ी प्रसिद्ध घटना हमारी स्वतन्त्रता के प्रारंभिक काल की है कि जब रुस में नियुक्त हमारे राजदूत ने अपने परिचय के कागजात अंग्रेजी में तैयार किये हुए प्रस्तुत किये तो रुस के अधिकारियों ने उन्हीं स्वीकार नहीं किया। उन्होंने कहा कि पत्र भारत अथवा रुप की भाषा में ही लिखे जा सकते हैं।

वस्तुतः बात यह है कि इस दास मनोवृत्ति के रोग का ठीक-ठाक निदान नहीं हुआ। जब तक रोग के कारण तक न पहुंचा जाय तब तक ऊपर की लीपा-पोती से कुछ बनने वाला नहीं है। ये रोग के कीटाणु हमारे बच्चों के मन और मस्तिष्क में प्रवेश करते हैं। उन्हें दी जाने वाली शिक्षा के माध्यम से। तथाकथित सुसंस्कृत घरानों में सारी शक्ति इस बात पर लर रही है कि उनका बच्चा जब पहले-पहले बोले तो अंग्रेजी में बोले। बड़े घरानों के छोटे-छोटे बालक जब फर्राटे से अंग्रेजी बोलते हैं तो उनके माता-पिता प्रसन्नता से गद्‌गद् हो जाते हैं और फिर आप आशा करते हैं कि उनमें स्वभाषा और संस्कृति के लिए राष्ट्रीय स्वाभिमान जागृत हो। वे तो यह धारणा बनाते हैं कि जो अंग्रेजी न पढ़ सकते और न ही बोल सकते वे पिछरे हुए और असभ्य हैं।

अतः इसमें सुधार के लिए आवश्यकता है कि शिक्षा के ढांचे में अमूल-चूल परिवर्तन किया जाए। ये पब्लिक और कान्वेन्ट स्कूल कठोरता से एक साथ समाप्त कर दिये जावें। ये अंग्रेजी के स्कूल और कालेज मैकाले ने भारतीयों को शिक्षित करने के लिए नहीं अपितु अंग्रेजों की भाषा समझकर भारतीयों पर शासन करने में सुविधा प्राप्त करने के लिए खोले थे। मैकाले के निम्न शब्द बहुत प्रसिद्ध है, इसलिए यहां उनका उद्धरण प्रासंगकिता को देखकर देना उचित ही होगा -

We must do our best to form a class who may be interpreter between us and the millions whom we govern. A class of person Indian in blood, but English in tast in opinions in morals and in intellect.

आश्चर्य है कि भारत के स्वाधीन होने पर प्रत्येक राष्ट्रपति एवं प्रधानमंत्री ने वर्तमान शिक्षा के ढांचे को भारत के लिए अनुपयुक्त बताया, इसे बदलने की बात भी कही, किन्तु हम देखते हैं कि परिवर्तन कुछ नहीं हुआ अपितु दास मनोवृत्ति की जकड़ पहले से और कड़ी होती जा रही है।

'फलक के नीचे से हम तो कभी के निकल जाते,
मगर रास्ता न पाया।'

इस दिशा में लिखने के लिए बहुत कुछ है, किन्तु लेख को सीमा में रखना भी आवश्यक है। शिक्षा का उद्देश्य शारीरिक, आत्मिक और सामाजिक उन्नति करना है। शारीरिक उन्नति के साधन ब्रह्मचर्य, व्यायाम और प्राणायाम, आत्मिक उन्नति के लिए यम, नियमादि को अपनाना आवश्यक है। सांसारिक उन्नति के लिए शिल्प, व्यवसाय, वाणिज्यादि साधन हैं, किन्तु प्रचलित प्रणाली से किसी एक उद्देश्य की पूर्ति भी तो नहीं होती। मोटे तौर पर इस पद्धति में अग्रलिखित त्रुटियां है :-

(१) सदाचार की कमी :- मानवता के शत्रु काम, क्रोधादि को जीतने की शिक्षा का सर्वथा अभाव है। गाली-गलौच करना, अभक्ष्य भक्षण करना, सिगरेट, मद्य पीना आदि कुकर्म तो यहां उत्तराधिकार में प्राप्त होते हैं।

(२) संस्कृति का अभाव :- पाठ्यक्रम में निर्धारित ग्रन्थों में बी.ए. और एम.ए. तक जो विचार सामग्री विद्यार्थियों ने प्राप्त की है, उससे प्रभावित होना स्वाभाविक है, किन्तु ग्रन्थों में चाहे और जो कुछ हो पर आर्य-संस्कृति क्या है ? यह उसमें नहीं है।

(३) ब्रह्मचर्य का अभाव :- ब्रह्मचर्य बिना गुरुओं के नियन्त्रण तथा सादे और तपोमय जीवन के बिना सम्भव नहीं

thearyasamaj.org

है। उसका यहां सर्वथा अभाव है।

(४) दूषित नागरिक रहन-सहन में निवास :- चारों ओर सिनेमाओं की भरमार, सिनेमा कलाकारों के नाम और आकृतियों से बच्चा-बच्चा परिचित है, उस पर भी कोढ़ में खाज, घरों में टेलीविजन। तरंग में गुनगुनाने पर युवकों के मुख से कोई सिनेमा का गीत ही निकलेगा। किसी अच्छे कवि का भक्ति और देशोत्थान का गीत अपवाद की वस्तु है।

(५) सहशिक्षा :- प्राचीन मर्यादा थी कि बालक-बालिकाओं के विद्यालय पृथक्-पृथक् और दूर-दूर हो। लड़कियों की शिंक्षा के लिए देवियों और बालकों को पढ़ाने के लिए पुरुष अध्यापर रहें। यह बहुत मनोवैज्ञानिक और दूरदर्शितापूर्ण पद्धति थी। प्रारम्भ में आर्यसमाज ने अपने शिक्षणालयों में यह दृढ़ता बरती भी, किन्तु समय का प्रभाव सब को बहा ले गया। उर्दू के शायर अकबर के शब्दों में :-

'मयखानये रिफार्म की चिकनी जमीन पै।
वाहज का खानदान आखिर फिसल गया॥'

(६) सांस्कृतिक कार्यक्रम :- सांस्कृतिक कार्यक्रम के नाम पर असांस्कृतिक नृत्य, अभिनय आज के मन्त्रियों के सम्मान में हमारे बालक-बालिकाएँ नाचने और गाने के कार्यक्रम प्रस्तुत करते हैं और मन्त्रीजी प्रसन्न मुद्रा में उनकी सराहना करते हैं। यहां तो कुएं में भांग पड़ने वाली कहावत चरितार्थ हो रही है।

(७) गृहस्थी चक्र का प्रभाव :- शिक्षा काल में घर में ही रहने से कुटुम्बियों की चिन्ता, रोग, शोक, लड़ाई और झगड़ों के प्रभाव से बच्चे प्रभावित हुए बिना नहीं रह सकते।

(८) फीस के बोझ का दबाव :- स्कूल और कालेजों की भारी-भरकम फीस का जुटाना भी एक समस्या है। निर्धन ट्यूशन पढ़ा-पढ़ा कर उसे जुटाने का यत्न करते हैं।

(९) सादे रहन-सहन का अभाव :- विद्यार्थी काल में भी व्यवसाय भूषाओं का प्रचलन : स्कूलों तक तो निर्धारित वेश (यूनिफार्म) से कुछ सुविधा प्राप्त हो जाती है, किन्तु कालेज में पहुंचते ही यह बांध टूट जाता है और वहां का छात्र प्रतिदिन एक नई भूषा में श्रेणी पहुंचता है। इससे असमर्थ छात्रों में हीनता और डाह के भाव जगकर समाजिक जीवन को विषाक्त बनाते हैं।

(१०) अपव्यय :- अध्ययनकाल में ही फिजूलखर्ची का भाव बन जाता है। विशेषकर कालेज, हॉस्टलों में एक-दूसरे छात्र के कमरे में जाने पर कॉफी, चाय, जूस, पान, सिगरेट आदि पेश किये जाते हैं। अध्ययनकाल में इस अपव्य का अत्याचार अभिभावकों को सहना पड़ता है और बाद में यह स्वभाव उन्हें जीवन भर दुःख देता है।

(११) गुरु गौरव का अभाव :- प्राचीन परम्परा में ईस्वर के बाद माता-पिता से भी बढ़कर गुरु के प्रति आदर के भाव होते हैं। मनु ने गुरु माता और पिता दोनों का समन्वित रुप बताकर आदेश दिया है कि उससे कभी द्रोह न करें, किन्तु आज की शिक्षा में यह भावना लुप्त हो गई है। अतः गुरु के आचार से प्रेरमा लेने का प्रश्न ही उपस्थित नहीं होता।

(१२) देश सेवा की भावना का अभाव :- पढ़ाई में जब फीस चुकाई जाती है तो उनके निर्माण में किसी का क्या एहसान है? अतः राष्ट्र के लिए त्याग और बलिदान के भाव जागृत ही नहीं होते।

(१३) आत्मसम्मान का अभाव :- किसी प्रकार भी सही नौकरी प्राप्त करना ही परम लक्ष्य है। प्रार्थना-पत्र के नीचे **'मोस्ट-ओबिडियेन्ट सर्वेन्ट'** लिखने में कोई संकोच नहीं होता। इतने पर भी नौकरी नहीं मिलती। हमारे अध्ययनकाल में हास्य-रस के कवि हमारे एक साथी ने काशी में १९३४ में एक कविता लिखी थी कि मोस्ट ओबिडियेन्ट सर्वेन्ट लिखना बहुत पुरानी बात हो गई। अब इससे आगे पढ़कर लिख़ना चाहिए कि 'मोस्ट ओबिडियेन्ट हूँ, आपके सर्वेन्ट के सर्वेन्ट का सर्वेन्ट हूँ।' तब शायद नौकरी की कुछ आशा हो सकती है।

(१४) नास्तिकता :- जो छात्रावासों और कक्षाओं का ढांचा है उसमें ईश्वर-भक्ति, आत्मिक चिन्तन का नितान्त अभाव है। अतः खाना-पीना और मौज उड़ाना यही जीवन का उद्देश्य बनता है। प्राचीन समय में यह विचारधारा **'पिब, भुङ्क्ष्व, रमस्व च'** (Eat, drink and be merry) राक्षसों की थी, आर्यों की नहीं। स्पष्ट है कि इस विपरीत चक्र को सुधारने का काम गुरुकुल शिक्षा प्रणाली ही कर सकती है।

- दिल्ली

thearyasamaj.org

आधी दुनिया

बेटी का जीवन बचाएँ

- डॉ. बिजेन्द्रपाल सिंह

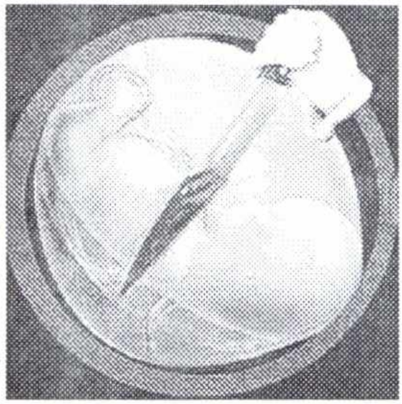

माननीय मोदी जी ने बेटी बचाओं का नारा दिया है इस अभियान से भारत में बेटियों पर हो अत्याचार कम होगे। आज इसके प्रति सजगता भी आई है। गर्भ में ही बेटी की हत्या कर दी जाती थी जो कि घिनौना कुकृत्य है। अपनी ही बेटी को गर्भ में मरवा देना एक महापाप है वैसा ही जैसा किसी बालक या बड़े शस्त्र से काट कर हत्या कर देना होता है जो कि अपराध है, वैसा ही जब सन्तान गर्भ में हो उसे मार देना उसकी हत्या ही तो है। ऐसा भारत में होने लगा था इससे बालिकाओं की शिशु दर भी कम हो गई अर्थात् बेटियों की संख्या बेटों की अपेक्षा कम हो गई यदि भ्रूण हत्या जैसा अपराध ऐसे ही चलता रहा तो बेटियां तो समाप्त ही हो जायेगी। होता यह है कि अनेक लोग ऐसा अमानवीय कृत्य करते हैं यदि गर्भ में बालिका है जिसका कि अल्ट्रासोनोग्राफी से पता चलता है उसे गर्भ में ही गर्भपात करा मार दिया जाता है। ऐसी मानसिकता उनकी होती है जो यह चाहते हैं कि उन्हें पुत्र ही होना चाहिए पुत्री नहीं यदि ऐसी सोच है तो गलत है क्योंकि यदि उस व्यक्ति के यहां पुत्र ही होते रहे बड़े भी हो जाये तो उनके लिये वधु कहां से आएगी। वह भी तो व्यक्ति होगा जिसके यहां गर्भ में पुत्री का पता चला होगा उसने गर्भपात नहीं कराया पुत्री हुई बड़े लाड़ प्यार से पाला होगा क्या उसका कुछ घट गया। यह मन का भ्रम है कि पुत्र से वंश चलता है पुत्री भी कम नहीं होती, आज बेटियां माता-पिता का नाम रोशन कर रही है।

पी.टी. उषा, प्रतिभा पाटिल, इन्दिरगांधी, किरण बेदी आदि महान हस्तियाँ ऊंचे पदों पर रही है, जिन्होंने देश का गौरव बढ़ाया है। मदालसा, गार्गी, मैत्रेयी, पाणिनी भी महिला थी, झांसी की रानी लक्ष्मी बाई व दुर्गा भाभी को कौन नहीं जानता। आज भी बेटियां न्यायहितकारी, जिलाधिकारी, वैज्ञानिक आदि है, जिन्होंने अपने माता-पिता का परिवार का नाम रोशन किया है। आज के वैज्ञानिक प्रगति के समय में बेटा-बेटी एक समान है और शिक्षित वर्ग में दोनों को ही समान महत्व दिया जाना चाहिए। भारत अब स्वतन्त्र है हमें समाज को उन्नति के पथ पर लाना चाहिए अनेक कुप्रथायें जो पहले थीं ऋषि दयानन्द ने उनका पुरजोर विरोध कर कुप्रथाओं को दूर करने का प्रयास किया। ऐसी अनेक कुप्रथायें थीं जो केवल महिलाों के लिए ही थीं, एक सती प्रथा, दूसरी जौहर, तीसरी बाल विवाह, चौथी बालिका के जन्म लेते ही उसको मार देना, पांचवी विधवा होने पर उनका जीवन यातनामय बना देना आदि आदि। आज गर्भ में अल्ट्रासाऊण्ड द्वारा बालिका पाए जाने पर भ्रूण हत्या करा दी जाती है। अतः यह सब बालका होने पर ही होता है। ऐसा कर बेटी का जन्म एक अपराध बना दिया। अनेक महान लोगों ने कुप्रथाों को रोकने हेतु इस क्षेत्र में बेटी का जीवन बचाने हेतु कार्य किये हैं।

दहेज प्रथा भी एक बहुत बड़ा अपराध है जिसे कि अनेक मूर्ख लोगों ने महत्व दे रखा है। बेटी वाले जब वर की तलाश करने चलता है तो अदिक तर वर पक्ष के लोग दुकानदारी करने लगते हैं, सीधे ही मांग करते हैं बहुत से लोग पहले न मांग कर वधु के घर में आने पर वधु को दहेज के लिए प्रताड़ित किया करते हैं। अतिरिक्त दहेज की मांग करते हैं न मिलने पर हत्या कर देते या ऐसी स्थिति पैदा कर देते है कि आत्म हत्या के लिए बाध्य हो जाते हैं। दहेज की मांग भी बेटी के लिए अभिशाप है। अनेक प्रकार से बेटियों की हत्या के मामलें न्यायालयों में चल रहे हैं। कहीं इन्हें गला दबाकर, कहीं जलाकर, कहीं भूखा रखकर प्रताड़ित कर आत्महत्या हेतु प्रेरित किया जाता है। ऐसे में बेटियां कहां सुरक्षित हैं ?

thearyasamaj.org

भारत में गर्भ से लेकर अन्त तक बेटी का जीवन नरक बन गया था, आर्यसमाज व अनेक संस्थाओं ने इस ओर ध्यान भी दिया, परन्तु आज भी बेटियों का जीवन भय के वातावरण में चल रहा। पिता के घर से पति के घर जाकर भी बेटी अधिकांशतः दुखी ही रहती है। इस ओर भी समाज में जागरुकता लानी आवश्यक है। आज बेटी का जीवन कष्ट में है, चाहे वह गर्भ में है, अथवा ससुराल में है। उसे अनेक प्रकार से कष्ट उठाने पड़ते हैं। बलात्कार, यौन अपराधों में वृद्धि हो रही है। दिल्ली, मुम्बई जैसे महानगरों में बेटियों के साथ बलात्कार हो जाते हैं। ग्राम में अथवा अन्य स्थानों पर ऐसे अपराध हो जाते होंगे अनेक स्थानों पर तो पता भी नहीं चलता होगा।

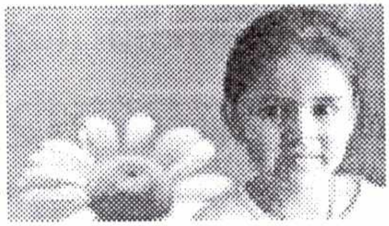

बेटियों की रक्षा बेटियां ही कर सकती है क्योंकि महिलाओं में सास ही अधिकांशतः दहेज आदि हेतु वधु को प्रताड़ित करती है। सास भी तो किसी बेटी है, जब बेटी जन्म लेती है तो यही उसका विरोध अधिकतर करती हैं। यह बेटी जो सास बनीं हैं अतिरिक्त दहेज की मांग करती है। यही सास बेटा होते ही कहती है कि दहेज में कार लूंगी बेटा के विवाह में खूब दहेज मिलेगा। जब ऐसी भावना आरम्भ से हो जाती है तो विवाह में दूल्हे का मोल तोल होना स्वाभाविक है। आज दूल्हों की दुकानें लगी हुई है, सौदेबाजी होती है। कौन दूल्हा कितने में बिकेगा इस पर सब्जी मंडी की भांति बात चलती है। सोचें क्या ऐसे सम्बन्ध जो दहेज की बोली पर होंगे स्थायी होंगे। कदापि नहीं भले ही बेटी पराये घर जाकर कुछ न बोले लेन-देन के विषय पर तनातनी रहती है।

दहेज एक कुप्रथा है, दहेज लेना न देना दोनों ही आपराधिक श्रेणी में आने चाहिए, विवाह शादी में दिखावा व्यर्थ के धन की बर्बादी, कोई विवाह संस्कार का विषय नहीं है। बारात की संख्या भीड़ बढ़ाना भी कोई अच्छा काम नहीं। इस प्रकार की अथाह भीड़ व दिखावे पर रोक लगानी चाहिए विवाह वैदिक विधि से हो प्रदर्शन से रहित हो। विवाह में धन का, जन बल का प्रदर्शन दहेज और नाच कूद, मद्यपान आदि व्यर्थ के कार्यों पर रोक लगाकर इसे सामान्य करना चाहिए। सर्वत्र एक समान विधि व नीति निर्धारित करनी चाहिए।

बाराती अधिक न हो, उनकी संख्या निश्चित होनी चाहिए। कोई मद्यपान न करे, गौड़े नाच कूद न हो, बैण्ड बाजे, डी.जे. साऊंड पर भी प्रतिबन्ध लगाना चाहिए। बाजार आदि में बारातों का जुलूस निकालने पर भी रोक लगे। दहेज में सीमा निर्धारण होना चाहिए। दूल्हों की बोली पर भी प्रतिबन्ध होना चाहिए। दूल्हों की दुकानदारी या सौदेबाजी अभिशाप है सम्बन्ध नहीं। वैदिक विधि का ध्यान रखना चाहिए यह सब बेटियों के हित में ही है।

बेटियों, वधुओं की हत्या न हो, भ्रूण हत्या न हो, इसके लिए वेदज्ञान का प्रकाश आवश्यक है। आर्यसमाज इसके लिए सदैव प्रयत्नशील है। आर्यसमाज ने इसीलिए गुरुकुल शिक्षा पर बल दिया है। वैदिक संस्कारों को करने के लिए प्रयास किए हैं। वेदों की ओर चलेंगे तो यह कालिमायुक्त कुरीतियों के बादल स्वयं ही हटने लगेंगे।

पता : चन्द्रलोक कालोनी, गली नं. १, खुर्जा-२०३१३१

मनुष्यों को कैसा होना चाहिए ?

ओ३म् उतेदानीं भगवन्तः स्यामोत प्रपित्व उत मध्ये अह्नाम्।
उतोदिता मघवन्त्सूर्यस्य वयं देवानां सुमतौ स्याम ॥

भावार्थ - जो मनुष्य जगदीश्वर के आश्रय और आज्ञा पालन से विद्वान, धार्मिक आप्त पुरुषों के संग से अति पुरुषार्थी होकर धर्म, अर्थ, काम और मोक्ष की सिद्धि के लिये प्रयत्न करते हैं वे समस्त ऐश्वर्यों को प्राप्त कर भूत, भविष्य और वर्तमान तीनों कालों में सुखी रहते हैं।

thearyasamaj.org

विज्ञानात्मक

वैदिक विज्ञान में एक आधुनिक ऋषि - महर्षि दयानन्द सरस्वती

- कृपालसिंह वर्मा

"महर्षि दयानन्द की सबसे बड़ी देन है - तर्क के आधार पर किसी बात का निर्णय करना।"

सत्य-असत्य, धर्म-अधर्म, कर्त्तव्य तथा अकर्त्तव्य का निर्णय करने के लिए बुद्धि को उपयोग करना। जो तर्क, युक्ति तथा वेदार्थ के विरुद्ध है वह असत्य है। वेद का प्रत्येक कथन तर्क सम्मत है। यदि वेद का कोई कथन तर्क एवं युक्ति के विरुद्ध प्रतीत होता है तो इसका अर्थ है कि हम उसको ठीक प्रकार से समझ पाये। **"प्रमाणं परम श्रुति।"** निरुक्त शास्त्र को प्रकाशित कना, निरुक्त के आधार पर वेद मन्त्रों की व्याख्या करना, इस महान ऋषि की महान देन है। इसी के आधार पर सब अनर्थों का निवारण हो सका है।

निरुक्त शास्त्र वैदिक विज्ञान का एक अनुपम ग्रन्थ है। निरुक्त के दैवत काण्ड में प्रकृति की विभिन्न शक्तियों का वर्णन है। समस्त शक्तियों को तीन भागों में विभक्त किया है।

(१) भूलोक में पायी जाने वाली शक्तियां- इनमें प्रमुख शक्ति है - अग्नि। अग्नि देवताओं का मुख है। कोई भी देवता बुलाना हो, आहुति में ही दी जाती है। यदि आपको इन्द्र देवता को बुलाना है तो अग्नि देवता के मुख में कोयले की आहुति देते हैं, उस अग्नि से पानी की भाप बनती है। पानी की भाप से Turbine Machine चलती है। Turbine Machine से Generator चलता है। Generator से अर्थात् विद्युत बनती है।

यदि आपको आदित्य देवता अर्थात् प्रकाश करना है तो अग्नि के मुख में आहुति देते हैं, अग्नि तीव्र होती है तथा प्रकाश प्रकट होता है। जब सूर्य से आने वाली आहवनीय अग्नि पृथिवी की सतह पर पड़ती है तो अनेक प्रकार की वनस्पतियां, औषधियां, कोयला, पेट्रोलियम का निर्माण होता है, जिसे सोम देवता कहते है। इसका अर्थ है कि सोम देवता को भी अग्नि देवता ही बुलाता है। सभी दिव्य शक्तियां अग्नि से ही प्रकट होती है।

वैदिक विज्ञान में कहा है - **"अग्नेः आपः"** अग्नि से ही जल देवता प्रकट होता है। आधुनिक विज्ञान भी यही कहता है। जब हाइड्रोजन को आक्सीजन की उपस्थिति में जलाया जाता है तो जल प्रकट होता है।

(२) अन्तरिक्ष में पायी जाने वाली शक्तियां - अन्तरिक्ष में पायी जाने वाली शक्ति वायु है। वायु से विद्युत (इन्द्र) तथा विद्युत से अग्नि प्रकट होती है। इसलिए कहा है - **"वायोरग्नि"** वायु से आग बनती है।

(३) द्यूलोक में पायी जाने वाली शक्ति - सूर्य द्यू लोक की शक्ति है। वास्तव में सूर्य सभी शक्तियों का मूल है। सूर्य प्राणरुप है। पृथिविी रयि रुप है। सूर्य एनर्जी रुप है, पृथिवी मैटर रुप है.

सूर्य पृथिवी का संयोग, प्राण तथा रयि का संयोग, एनर्जी तथा मेटर का संयोग, मेल तथा फिमेल का संयोग सृष्टि वृद्धि का कारण है। आधुनिक विज्ञान पूर्ण रुप से वेदों में समाहित है। अन्तर केवल इतना है कि आधुनिक विज्ञान प्रकृति को सब कुछ मानता है जबकि वैदिक विज्ञान परमाणु से लेकर परमात्मा तक का वर्णन करता है। वैदिक टेक्नोलॉजी को जाने बिना, वैदिक विज्ञान की सटीक जानकारी नहीं मिल सकती। इसके लिए सबसे आवश्यक है वैदिक विज्ञान के आधुनिक ऋषि को समझना और उनके द्वारा प्रतिपादित विज्ञान को समझना।

महर्षि दयानन्द ने जहां कहीं अन्तरिक्ष यान, वायु यान या रथयान का वर्णन करने के लिए वेदमन्त्रों का उपयोग किया है, उन वेद मन्त्रों में अश्विनौ शब्द अवश्य आया है। अश्विनौ क्या है ? इसका वर्णन यास्क आचार्य ने निरुक्त शास्त्र के दैवत काण्ड में किया है। द्यौ तथा पृथिवी को अश्विनौ कहते हैं। सूर्य तथा चन्द्रमा के जोड़े को अश्विनौ कहते है।

thearyasamaj.org

अन्धकार तथा प्रकाश के जोड़े को अश्विनौ कहते है। ज्योति तथा रस बल के जोड़ को अश्विनौ कहते हैं। सभी मशीने अग्नि तथा लोहे के संयोग से ही चलती है। मशीन न केवल लोहे से बनती है और न केवल अग्नि से। अग्नि द्यौ का रुप है तथा लोहा पृथिवी का विकार है। अश्विनौ शब्द का वैज्ञानिक अर्थ प्रकट करने वाले सर्वप्रथम महर्षि दयानन्द ही थे। वैदिक साहित्य में छः दर्शनशास्त्र है। दर्शनशास्त्रों में किंचित मात्र भी विरोध नहीं है। ये एक दूसरे के पूरक है। ये तथ्य वाले महर्षि दयानन्द ही थे। सभी दर्शन शास्त्रों के विषय अलग है इसलिए विरोध का सवाल ही नहीं उठता।

(१) योग दर्शन :- महर्षि पतञ्जलि कृत योगदर्शन का विषय है कि व्यक्ति किस प्रकार अपने ऊपर नियन्त्रण कर सकता है। ये मनोविज्ञान की सबसे अच्छी पुस्तक है। **"योगश्चितवृत्तिः निरोधः।"** अर्थात् प्रकाण, विपर्य, विकल्प, निद्रा तथा स्मृति रुपी पांचों वृत्तियों का निरोध।

(i) प्रमाण वृत्ति का निरोध - प्रमाणवृत्ति तीन है।

प्रत्यक्ष, अनुमान तथा आगम। योगी के प्रत्यक्ष वृत्ति का निरोध है - ज्ञानेन्द्रियों की वृत्तियों का निरोध अर्थात् जब आंखों से देखता नहीं, कानों से सुनता नहीं, त्वचा से स्पर्श नहीं करता, रसना से रस का ग्रहण नहीं, नासिका से गन्ध का ग्रहण नहीं करता। इसका अर्थ है प्रत्यक्ष प्रमाण वृत्ति का निरोध।

(ब) अनुमान वृत्ति का निरोध - जब मन से अनुमान नहीं लगता।

(स) आगम वृत्ति का निरोध - जब पुस्तकों से ज्ञान प्राप्त नहीं करता।

(ii) विकल्प वृत्ति का निरोध - जब योगी कोई कल्पना नहीं करता।

(iii) विपर्य वृत्ति का निरोध - जब मन विपरीत ज्ञान अर्थात् अविद्या में लगा न हो।

(iv) निद्रा वृत्ति का निरोध - जब मन निद्रा मुक्त हो।

(v) स्मृति वृत्ति का निरोध - वह अवस्था जब मन कुछ भी स्मरण न कर रहा हो। अर्थात् जब हमारा मन किसी ज्ञानेन्द्री तथा कर्मेन्द्री से युक्त न हो, जब हमारा मन विचार शून्य हो, जब हमारा मन स्मृति रहित हो तो क्या अवस्था मन की होती है ?

उत्तर :- **"तदा द्दष्टु स्वरुपे अवस्थानाम्।"**

उस समय द्दष्टा आत्मा की अपने स्वरुप में स्थिति होती है। उस समय आत्मा की सबसे द्दष्टा आनन्दस्वरुप, ज्ञानस्वरुप तथा शक्ति स्वरुप परमात्मा में स्थिति होती है। यही योग की अवस्था है। इस अवस्था के प्राप्त होने पर आत्मा में बल का संचार होता है, ज्ञान का संचार होता है तथा आनन्द का संचार होता है। ये तीनों अन्दर से बाहर को आते हैं, जबकि विषय सुख, विषय-ज्ञान तथा विषय शक्ति बाहर से अन्दर जाती है।

(२) सांख्य दर्शन :- (i) आध्यात्मिक दुःख - शरीर, मन, आत्मा में दोष आने पर होने वाले दुःख।

(ii) आधि भौतिक दुःख - दूसरे प्राणियों से मिलने वाले दुःख।

(iii) आधि दैविक दुःख :- निर्जीव वस्तुओं से मिलने वाले दुःख। इन तीनों दुःखों का निवारण किस प्रकार हो सकता है? इस तथ्य का विषद् वर्णन महर्षि कपिल ने अपने सांख्य दर्शन में किया है।

(३) न्याय दर्शन :- वैदिक विज्ञान में न्याय का अर्थ होता है सिद्धान्त। संसार किन सिद्धान्तों पर आधारित है तथा उनकी सत्यता का परीक्षण कैसे हो सकता है। यही न्याय दर्शन का विषय है। यह अनुपम पुस्तक महर्षि गौतम की देन है।

(४) वैशेषिक दर्शन :- परमाणु से लेकर सृष्टि पर्यन्त का ज्ञान है। भौतिक विज्ञान की एक अनुपम पुस्तक है जो परमाणु से लेकर परमात्मा तक का वर्णन करती है।

(५) वेदान्त दर्शन :- परमात्मा के स्वरुप का वर्णन करती है। परमात्मा, जीवात्मा तथा प्रकृति के सम्बन्धों की अनुपम व्याख्या है। महर्षि व्यास की देन है।

(६) मीमाँसा दर्शन :- प्राकृतिक शक्तियां अर्थात् जड़ देवताओं का जीवन को सुखी बनाने के लिये प्रयोग करना। इसका मुख्य विषय है। जिस प्रकार शतपथ ब्राह्मण में यजु मन्त्रों की तथा ऐतरेय ब्राह्मण में ऋक्, सूक्तो की वैज्ञानिक व्याख्या है।

वैदिक साहित्य में वेद मन्त्रों की तीन प्रकार की व्याख्याएं है।

(अ) उपनिषद् ग्रन्थ वेदों की आध्यात्मिक व्याख्याएं है।

thearyasamaj.org

(ब) स्मृति ग्रन्थ वेदों की सामाजिक व्याख्याएं है।
(स) ब्राह्मण ग्रन्थ वेदों की वैज्ञानिक व्याख्याएं है।

चार वेद, छः दर्शन, अष्टाध्यायी, महाभाष्य जैसे व्याकरण ग्रन्थ तथा विज्ञान के क्षेत्र में भारद्वाज ऋषि प्रणीत वृहद् विमान शास्त्र, अंशुबोधिनी, वैद्यक शास्त्र के अनुपम ग्रन्थ तथा विद्युत विज्ञान पर लिखी अगस्त्य संहिता आदि अनुपम ग्रन्थ हैं लेकिन हमारे स्वाध्याय विमुख होने के कारण ऋषियों की तपस्या का फल निष्फल हो रहा है।

आर्यसमाज का एक अत्यन्त उज्ज्वल पक्ष है। वह है अत्यन्त श्रेष्ठ पुस्तकों का प्रकाशन। वेदों पर, दर्शनों पर, व्याकरण पर एक से एक अच्छी पुस्तकें प्रकाशित हो रहा हैं तथा विभिन्न आर्य पत्र एवं पत्रिकाएं आर्य विचारों का प्रचार कर रही हैं। यह परिश्रम एक दिन अवश्य फलीभूत होगा।

महर्षि दयानन्द सरस्वती ने आर्यसमाज के सामने विश्व के सर्वोच्च शिखर पर चढ़ने का प्रस्ताव रख दिया है। सबसे ऊंचे शिखर की चोटी पर पहुंचने में सबसे अधिक समय लगेगा। महर्षि दयानन्द द्वारा स्थापित तथा वैदिक विद्वानों द्वारा पौषित यह अभियान एक दिन अवश्य ही अपने लक्ष्य को प्राप्त करेगा।

पता - २५३, शिवलोक, कंकरखेड़ा, मेरठ (उ.प्र.)

भाग्य और पुरुषार्थ का अन्तर्द्वन्द्व

नेता यस्य बृहस्पतिः प्रहरणं बज्रं सुराः सैनिकाः, स्वर्गोदुर्गमनुग्रहः किलहरेरैरावतो वारणः।
इत्याश्चर्य्यबलान्वितोऽपि बलभिद्हतः परैः सङ्गरे, तद्युक्तं वरमेव दैवशरणं धिग्धिग्वृथा पौरूषम्॥

(राजशेखर)

भावार्थ :- इस संसार में अनन्तपथ पर सृष्टि के प्रारंभ से ही भाग्यश्री और पुरुषार्थी का अन्तर्द्वन्द निरन्तर चला आ रहा है। एक की हार दूसरे की जीत ? कैसी विचित्र विडम्बना है - यह भी ? संस्कृत साहित्य के कविवर महाविज्ञान राजशेखर ने उपर्युक्त अन्र्तद्वन्द का जिस व्यङ्गात्मक रुप से वर्णन किया है - वह अद्वितीय है। देखिए -

इन्द्र के प्रति सम्बोधित कर कवि कहते हैं :- सम्राटों का सम्राट् वह इन्द्र कैसा प्रभुत्ववाला रहा है- जिसके नेता बृहस्पति महाराज है। वृहस्पति की जिस पर कृपा हो उसे किस बात की न्यूनता हो सकती है, किसी बात की नहीं, और प्रहारकर्त्ता वज्र जिसका शस्त्र हो, देवता लोग जिसके सैनिक हों, स्वर्गरुपी किला जिसके रहने का घर हो, हरि की कृपा भी जिस पर अपार हो ऐरावत हाथी जिसके चलने के लिए सवारी हो, भला किसी बात का अभाव है - इन्द्र को, किसी बात का भी तो ....नहीं ? पुनरपि अत्यन्त आश्चर्य है कि - इतनी बलयुक्त सामग्रियों साधनों से युक्त सुरक्षित होकर भी इन्द्र युद्ध में शत्रुओं से प्रायः हारता ही रहा। कारण क्या है? कविवर कहते हैं कि - भाग्य के आगे पुरुषार्थ की दौड़ भी ठप्प ही जाती है। वास्तव में भाग्य की शरण ही समुचित है। कितना भी पुरुषार्थ क्यों न किया जाए परन्तु दैव की गति के आगे पुरुषार्थ की कुछ चलती ही नहीं है। पुरुषार्थ तुझे धिक्कार है - धिक्कार है।

- सुभाषित सौरभ

अपने स्वास्थ्य की रक्षा कीजिए : दुनिया के अत्यन्त पौष्टिकता जागरुक डाक्टर अब यह मानते हैं कि शाकाहार वस्तुतः मांसाहार की तुलना में कई ज्यादा स्वास्थ्यवर्धक है, विश्व के अग्रणी एपिडेमियोलॉजिस्ट, कार्नेल युनिवर्सिटी के डॉ. कैम्पबैल का कहना है कि ज्यादा प्रकार के कैंसरों, हृदय रोगों तथा विपोषक रोगों के अन्य खुराक को अपनाना। आर्टरी के अवरोधों को जटिल और महंगी सर्जरी के बजाए कम वसावली, डेयरी-मुक्त शाकाहारी भोजन के जरिए दूर किया जा सकता है।

thearyasamaj.org

महाभारत में व्रत-चिन्तन

- महात्मा चैतन्यमुनि

महाभारत में (अनुशासन पर्व) वास्तविक व्रतों के सम्बन्ध में विस्तार से बताया गया है तथा साथ ही इन वैदिक व्रतों का अनुष्ठान करने से किस-किस फल की प्राप्ति होती है, इसकी भी चर्चा की गई है। धर्मराज युधिष्ठिर पितामहजी से पूछते है - महातेजस्वी ! व्रतों का क्या और कैसा फल बताया गया है ? नियमों के पालन और स्वाध्याय का क्या फल है ? दान देने, वेदों को धारण करने, कण्ठस्थ करने और उन्हें पढ़ाने का क्या फल है ? यह सब मैन जानना चाहता हूँ। पितामह ! संसार में जो दान नहीं लेता, उसे क्या फल मिलता है ? जो वेदों का ज्ञान प्रदान करता है, उसे कौन-से फल की प्राप्ति होती है ? अपने कर्त्तव्य पालन में तत्पर रहने वाले शूरवीरों को किस फल की प्राप्ति होती है ? पवित्रता और ब्रह्मचर्यपालन का क्या फल बताया गया है ? माता-पिता की सेवा से, आचार्य और गुरु की सेवा से तथा प्राणियों पर अनुग्रह और दयाभाव बनाए रखने से किस फल की प्राप्ति होती है ? ये सभी बाते मैं यथार्थरुप से जानना चाहता हूं। इसके लिए मेरे मन में बड़ी उत्कण्ठा है। इसके उत्तर में पितामह इसके उत्तर में कहते है - युधिष्ठिर ! जो मनुष्य शास्त्रोक्त विधि से किसी व्रत को आरम्भ करके पूर्ण रीति से समाप्त करते हैं, उन्हें सनातन लोकों की प्राप्ति होती है। इस लोक में नियमों का पालन का फल तो प्रत्यक्ष ही है। तुमने यह निमयों और यज्ञों का फल ही प्राप्त किया है। वेदों के स्वाध्याय का फल इहलोक और परलोक दोनों में देखा जाता है। स्वाध्यायशील द्विज इहलोक और ब्रह्मलोक-मोक्ष में सदा आनन्द भोगता है। अब तुम मेरे द्वारा विस्तारपूर्वक कथित दम (इन्द्रिय-संयम) का फल सुनो। जितेन्द्रिय पुरुष सर्वत्र सुखी और सन्तुष्ट रहते हैं। इन्द्रिय-संयमी जहां चाहते कर देते हैं, इसमें तनिक भी सन्देह नहीं है। दान से दम का स्थान ऊंचा है। दानी पुरुष ब्राह्मणों को कुछ दान करते समय कभी क्रोध भी कर सकता है, परन्तु जितेन्द्रिय कभी क्रोध नहीं करता, अतः दम दान से श्रेष्ठ है। नरेश्वर ! शिष्यों को वेद पढ़ाने वाला अध्यापक कष्ट सहन करने के कारण अक्षय फल का भागी होता है। अग्नि में विधिपूर्वक हवन करके ब्राह्मण ब्रह्मलोक में प्रतिष्ठित होता है। जो वेदों का अध्ययन करके न्यायपरायण शिष्यों को विद्यादान करता है और गुरु के कार्यों की प्रशंसा करने वाला है, वह स्वर्गलोक में प्रतिष्ठित होता है। वेदाध्ययन, यज्ञ तथा दान देने में तत्पर रहने वाला और युद्ध में दूसरों की रक्षा करने वाला क्षत्रिय भी स्वर्गलोक में पूजित होता है। अपने कर्त्तव्य-पालन में लगा हुआ वैश्य दान देने से उच्चपद को प्राप्त होता है। अपने कर्म में तत्पर रहने वाला शूद्र सेवा के द्वारा स्वर्ग में जाता है।

शूरवीरों के अनेक भेद बता गए हैं।उन सबके तात्पर्य मुझसे सुनो ! उन शूरों के वंशजों तथा शूरों के लिए जो फल बताया गया है, उसे बताता हूँ। कुछ लोग यज्ञशूर होते हैं, कोई इन्द्रियसंयमी होने के कारण दमशूर कहलाते हैं। इसी प्रकार कितने ही मनुष्य सत्यशूर, युद्धशूर तथा दानशूर कहे गए हैं। कोई बुद्धिशूर है तो कोई क्षमाशूर है। कितने ही मनुष्य सरलता दिखाने में शूर होते हैं, तो बहुत से शम (मनोनिग्रह) में शूरता प्रकट करते हैं। विभिन्न नियमों द्वारा अपनां शौर्य प्रकट करने वाले और भी बहुते से शूरवीर है। कितने ही वेदाध्ययन शूर, अध्यापन-शूर, गुरुसेवा-शूर, पितृशेवा-शूर, मातृसेवा-शूर और कितने ही (स्नातक एवं संन्यासी आदि) भिक्षा मांगने में शूर हैं। कुछ लोग वनवास-शूर, कुछ गृहवास में शूर और कुछ लोग अतिथियों की सेवा-सत्कार में शूरवीर होते हैं। ये सब के सब अपने कर्मफलों द्वारा उपार्जित उत्तम लोकों अर्थात् योनियों को प्राप्त होते हैं। यदि तराजू के एक पलड़े पर एक सहस्त्र अश्वमेध यज्ञों का पुण्य और दूसरे पलड़े पर केवल सत्य रखा जाए तो एक सहस्त्र अश्वमेध यज्ञों की अपेक्षा सत्य का ही पलड़ा भारी रहेगा। सत्य के प्रभाव से

thearyasamaj.org

सूर्य तपता है, सत्य से अग्नि प्रज्वलित होतीहै , सत्य से ही वायु का सर्वत्र संचार होता है और सब कुछ सत्य पर ही टिका हुआ है। देवता, पितर और ब्राह्मण सत्य से ही प्रसन्न होते हैं। सत्य को ही परम-धर्म बताया गया है, अतः सत्य का कभी उल्लंघन नहीं करना चाहिए। ऋषि-मुनि, सत्यपरायण, सत्यपराक्रमी और सत्यप्रतिज्ञ होते हैं। अतः सत्य सबसे श्रेष्ठ है। भरत श्रेष्ठ ! सत्यवादी स्वर्गलोक में आनन्द भोगते हैं परन्तु दम (इन्द्रिय-संयम) उस सत्य के फल की प्राप्ति में कारण है। यह बात मैंने हृदय से कही है। जिसने अपने मन को वश में करके विनयशील बना दिया है, वह निश्चय ही स्वर्गलोक में सम्मानित होता है। पृथ्वीनाथ ! अब तुम ब्रह्मचर्य के गुण सुनो। प्रजेश्वर ! जो इस संसार में जन्म से लेकर मृत्युपर्यन्त ब्रह्मचारी रहता है, उसके लिए कुछ भी दुर्लभ नहीं है, इस बात को जान लो। जो मनुष्य माता-पिता बड़े भाई, गुरु और आचार्य की सेवा करता है और उनके गुणों में कभी दोषदृष्टि नहीं करता, उसको मिलने वाले फल को जान लो-उसे स्वर्गलोग में सबके द्वारा सम्मानित स्थान प्राप्त होता है। मन को वश में रखने वाला मनुष्य गुरुसेवा के प्रभाव से कभी नरक का दर्शन नहीं करता।

इसी प्रसंग में धर्मराज आगे पूछते है - पितामह ! साधारण लोग जो उपवास को ही तप कहा करते हैं, उसके सम्बन्ध में आपकी क्या धारणा है ? मैं यह जानना चाहता हूँ कि क्या वास्तव में उपवास ही तप है या उसका कोई और स्वरुप है ? इसके उत्तर में पितामह कहते हैं :-

मासर्धमासोपवासाद् यत् तपो मन्यते जनः।
आत्मतन्त्रोपघाती यो न तपस्वी न धर्मवित् ॥
त्यागस्य चापि सम्पत्तिः शिष्यते तप उत्तमम्।
सदोपवासी च भवेद् ब्रह्मचारी तथैव च ॥
मुनिश्च स्यात्सदा विप्रो वेदाँश्चैव सदा जयेत्।
कुटुम्बिको धर्मकामः सदास्वप्नश्च मानवः ॥
अमांसाशी सदा च स्यात् पवित्रं च सदा पठेत्।
ऋतवादी सदा च स्यान्नियतश्च सदा भवेत् ॥
विधसाशी सदा च स्यात् सदा चैवातिथिप्रियः।
अमृताशी सदा च स्यात् पवित्री च सदा भवेत् ॥

राजन् ! जो लोग पन्द्रह दिन अथवा एक मास तक उपवास करके उसे तपस्या मानते हैं, वे व्यर्थ ही अपने शरीर को कष्ट देते हैं। वास्तव में केवल उपवास करने वाले न तपस्वी है, न धर्मज्ञ। त्याग का सम्पादन ही सबसे श्रेष्ठ तप है। वव्रचारी मनुष्य को सदा उपवासी (व्रतपरायण-अपने संकल्प पर अडिग रहना) और ब्रह्मचारी होना चाहिए। ब्राह्मण को सदा स्वाध्यायी और मुनि होना चाहिए। धर्मपालन की इच्छा से ही उसे स्त्री आदि कुटुम्ब का संग्रह करना चाहिए। (विषय-भोग के लिए नहीं) और सदा जागरुक रहना चाहिए। व्रतचारी मनुय को उचित है कि वह मांस कभी न खाए, पवित्रभाव से सदा वेद का स्वाध्याय करे, सदा सत्यभाषण करे और इन्द्रियों को संयम में रखे। उसे सदा विधसाशी, अमृताशी, अतिथिप्रिय और सदा पवित्र रहना चाहिए। आगे धर्मराज पूछते हैं - महाराज ! ब्राह्मण कैसे सदा उपवासी और ब्रह्मचारी कैसे विधसाशी और अतिथिप्रिय हो सकता है ? इसके उत्तरम में पितामह जी कहते हैं युधिष्ठिर ! जो मनुष्य केवल प्रातःकाल और सायंकाल ही भोजन करता है, बीच में कुछ नहीं खाता, उसे सदा उपवासी समझना चाहिए। जो केवल ऋतुकाल में अपनी धर्मपत्नी के साथ सहवास करता है, वह ब्रह्मचारी ही माना जाता है। सदा दान देने वाला मनुष्य सत्यवादी ही समझने योग्य है। जो मांस नहीं खाता, वह अमांसाशी होता है और जो सदा नौकर-चारकों और अतिथियों के भोजन कर लेने के पश्चात् ही स्वयं भोजन करता है, उसे ही अमृतभोजन करने वाला समझना चाहि। जब-तक ब्राह्मण भोजन न कर लें, तब-तक जो अन्न ग्रहण नहीं करता, वह मनुष्य अपने उस व्रत के द्वारा स्वर्गलोक पर विजय प्राप्त कर लेता है। जो विद्वानों, पितरों और आश्रितों को भोजन कराने के पश्चात् बचे हुए अन्न का ही स्वयं भोजना करता है, उसे विधसाशी कहते हैं। जो विद्वानों, अतिथियों सहित पितरों-माता, पिता, वृद्धजनों के लिए अन्न का भाग देकर स्वयं भोजन करते हैं, वे इस संसार में पुत्र-पौत्रों के साथ नाना प्रकार की वस्तुएं दान देते हैं। मैं यह जानना चाहता हूँ कि दान देने और दान लेने वाले मनुष्य में क्या विशेषता है ? इसके उत्तर में पितामह कहते हैं - 'जो ब्राह्मण साधु (सदाचारी) और असाधु (दुराचारी) पुरुष से दान लेता है, उनमें सद्गुणी पुरुष से दान लेना अल्प दोष है किन्तु दुराचारी से दान लेने वाला पाप में

thearyasamaj.org

डूब जाता है।' युधिष्ठिर ने गृहस्थ-धर्म के बारे में पूछा तो पृथिवीदेवी द्वारा श्रीकृष्ण को दिए गए उत्तर को उद्धृत करते हुए पितामह कहते है - 'गृहस्थ को सदा ही देवताओं, पितरों, ऋषियों और अतिथियों का पूजन एवं सत्कार करना चाहिए... प्रतिदिन यज्ञ के द्वारा देवताओं का, अतिथि-सत्कार के द्वारा मनुष्यों का (श्रद्धापूर्वक सेवा द्वारा पितरों, माता-पिता आदि) तथा वेदों का नित्य स्वाध्याय करके पूजनीय ऋषि-महर्षियों का यथाविधि पूजन और सत्कार करना चाहिए। इसके पश्चात् भोजन करना उचित है। प्रतिदिन भोजन से पूर्व अग्निहोत्र और बलिवैश्वदेव यज्ञ करे। माता-पिता की प्रसन्नता और तृप्ति के लिए प्रतिदिन अन्न और जल आदि द्वारा उनकी सेवा करें। भोजन तैयार होने पर उसमें से अन्न लेकर विधिपूर्वक बलिवैश्वदेव यज्ञ करना चाहिए। गृहस्थ को सदा यज्ञशेष का ही भोजन करना चाहिए। कुत्तों, चाण्डालों और पक्षियों के लिए भूमि पर अन्न रख देना चाहिए। यदि बलिवैश्वदेव नामक यज्ञ है। इसका प्रातः और सायंकाल अनुष्ठान किया जाता है। नरेश्वर! इस गृहस्थ-धर्म का पालन करते रहने पर तुम इस लोक में सुयश और मरने पर स्वर्ग अर्थात् सुखविशेष को प्राप्त कर लोगे।' महाभारत में एक अत्यन्त सुन्दर प्रसंग आता है (अनुशासन पर्व) जहां मैत्रेयजी के आतिथ्य से प्रसन्न होकर महर्षि व्यासजी कहते हैं -

त्रीण्येव तु पदान्याहुः पुरुषस्योत्तमं व्रतम्।
न द्रुह्येच्चैव दद्याच्च सत्यं चैव परं वदेत्॥

वेद मनुष्यों के लिए तीन बातों को उत्तम व्रत बताते हैं - किसी के प्रति द्रोह अर्थात् वैर-भाव न रखना, दान देना और सत्य वचन बोलना। वेद, मनुस्मृति, उपनिषद्, महाभारत तथा योगदर्शन के अनुसार संकल्प एवं दृढ़-निश्चयादि का नाम व्रत है। वेद में जिन बातों का अनुष्ठान करने के लिए कहा गया है, उनमें प्रमुख है- हम ब्रह्मचर्य का धारण करें, काम-क्रोध-लोभ-ईर्ष्या से उपराम होने का व्रत लें, प्राण-साधना, तपस्वी जीवन, कर्मशीलता, यज्ञ करना, ज्ञानवान् बनना, सत्यवादी बनना, दान देना, शारीरिक निरोगता, मस्तिष्क की परिकृष्तता, हृदय की विशालता तथा उपासना का संकल्प लें। ऋग्, यजु व साम को भूःभवः व स्वः को, ईश्वर, जीव व प्रकृति को तथा प्राण, अपान व व्यान को जानें आदि। योगदर्शन में अहिंसा, सत्य, अस्तेय, ब्रह्मचर्य और अपरिग्रह इन पांच यमों को महाव्रत कहा गया है। मनु महाराज जी ने जिन व्रतों की चर्चा की है वे मुख्यतः इस प्रकार है - श्रेष्ठ विधि से ही आजीविका चलाना, सुख, आयु, यश, धन की पवितत्रता, इन्द्रिय-निग्रह, स्वाध्याय, पांच-यज्ञ, अच्छी संगति, ब्रह्ममुहुर्त में उठाकर सन्ध्योपासना, यम-नियमों का अनुपालन, पर्व के दिनों में रजस्वला स्त्री से गमन न करना, परस्त्री से गमन न करना, मन में आत्महीनता के भाव नहीं, सत्य-धर्म का पालन, धर्म-वर्जित अर्थ व काम का त्याग, दान-वृत्ति तथा आत्मचिन्तन आदि। उपनिषद् में कीर्तिवान्, अग्निमय जीवन, परस्त्री व पुरुष से व्याभिचार नहीं, तपोमय जीवन, वर्षा की निन्दा न करने, ऋतुओं की निन्दा न करने, जनता की निन्दा न करने, पशु निन्दा न करने, मांस न खाने, ब्राह्मणों की निन्दा न करने तथा आत्मा को ऊंचा रखने, मेधा-बुद्धि, शारीरिक सबलता, मधुर-वाणी, यज्ञादि, ऋत्, सत्य, तप, दम व शम, यश, स्वाध्याय, प्रवचन, कीर्ति, पवित्रता, अन्न, धन्न, बुद्धि, धर्माचरण, माता-पिता-आचार्य-अतिथि को देव मानना, श्रद्धा से दानादि देना, धर्माचार आदि में सन्देह होने पर किसी उच्चकोटि के ब्राह्मण को प्रमाण मानना। महाभारत में अनेक व्रतों का अनुष्ठान करने के लिए कहा गया है तथा उनसे मिलने वाले उत्तम फलों का भी विवेचन किया है। महाभारत में वर्णित कुछ मुक्य व्रत इस प्रकार है - वेद स्वाध्याय, इन्द्रिय-संयम, दान, दम, विद्या, यज्ञ, बलिवैश्वदेव-यज्ञ, माता-पिता-आचार्य-पितर-वृद्ध, बड़े भाई, गुरु व अतिथि की सेवा करना, विनयशीलता, ब्रह्मचर्य और मांस न खाना आदि।

पता - महादेव सुन्दरनगर, १७४४०१ (हि.प्र.)

क्या आपने सुना है?

दुनिया भर में लोग शाकाहार की ओर बढ़ रहे हैं, खिलाड़ी, डॉक्टर, और सुपर मॉडल से लेकर फिल्म स्टार तक, क्या आप जानते हैं इस समय सिर्फ अमेरिका में ही १७ मिलियन से ज्यादा रोग शाकाहारी है और हर साल १ मिलियन लोग गोश्त मुक्त आहार अपना रहे हैं? इंग्लैण्ड में हर सप्ताह २००० व्यक्ति शाकाहारी बन रहे हैं।

thearyasamaj.org

प्रासङ्गिक

रेल्वे एवं केन्द्रीय बजट २०१५-१६

मध्यम वर्गीय के लिये दण्ड

- अधिवक्ता सत्यप्रकाश आर्य

केन्द्रीय बजट में किराया न बढ़ाकर वाह-वाही लूटने का ढिंढोरा पीटा था, उसको केन्द्रीय बजट २०१५-१६ ने छीन लिया है तथा केन्द्रीय बजट रेल्वे को अनुदान देता है, उसकी भरपाई १२% यानी किराये सरचार्ज लगाकर वसूल कर लिया है। केन्द्रीय बजट से १ लाख से ५ लाख तक की आय वालों से ९०० रु. से लेकर २५०० रु. तक प्रत्येक माह में महंगाई बढ़ाकर पेट्रोल, डीजल, सर्विस टैक्स तथा रेल्वे की सीमेन्ट, कोयला, लोहा भाड़े की सब्सिडी को सरचार्ज बढ़ाकर लाभ कमा लिया है। इस प्रकार मध्यमवर्ग को आम आदमी पार्टी मानकर दण्डित कर लिया है। दोनों बजटों से अच्छे दिन नहीं बुरे दिन आ गये हैं। महिलाओं को भी नहीं बख्सा महीने में एक दिन आराम होटल में खाने से तथा ब्यूटी पार्लर में जाने से मनाकरके उनके आराम और सुख को छीन लिया है। पेट्रोल तथा डीजल के दाम बढ़ाने से दोहरी मार लगाई है।

रेल्वे बजट यथास्थिति है। कोई विकास का रास्ता नहीं है, विगत १५ वर्षों से वर्तमान बजट में कोई मार्ग नहीं खोजा गया है। राजनैतिक कारणों से संसाधन जुटाने का प्रयास रेल्वे के अन्तर्गत संसाधनों या बाहरी संसाधनों का प्रावधान नहीं है। रेल्वे यात्री किराया न बढ़ाने का ढिंढोरा दिखावा है क्योंकि -

(१) बिना बजट के ही १४%, १६/%, एवं ८% पूर्व में ही बढ़ाया जा चुका है।

(२) मुख्य टर्मिनल स्टेशनों देहली, कलकत्ता, चेन्नई, मुम्बई से बाहर जाने वाली गाड़ियों को लगभग २०० किलोमीटर बाहर जाने वाली गाड़ियों का समय १ घंटे कम तथा वहां पहुंचने वाली गाड़ियों का समय १ घंटे देरी से पहुंचने का समय घटा दिया जाता है, जिससे टेक्नोक्रेट रेल मंत्री पर हावी रहते हैं।

(३) इन उपायों से यात्रियों एवं उपभोक्ताओं को ठगा जाता है।

(४) रेल्वे के यूरिया तथा अनाजों में १०% वृद्धि से महंगाई २०% बढ़ जायेगी।

(५) कोयला, सीमेन्ट तथा बाल्को वस्तुओं में सब्सिडी देकर उद्योगों तथा बिजली कंपनियों को लाभ पहुंचाया जाता है। इस पर भी राज्य सरकारों को राजनैतिक कारणों का टैक्स का हिस्सा ३२% से ४०% बढ़ाकर दिया जायेगा। संघठनात्मक ढांचे को मजबूत बनाने का दावा किया जाता है।

(६) राज्य सरकारें तथा केन्द्र सरकार २ रु. प्रति किली अनाज देकर उनकी आय बढ़ाती है किन्तु रेलयात्री किराया नहीं बढ़ाया जाता है।

(७) प्राइवेट संस्थाओं को बढ़ावादेने के लिये निजीकरण का मार्ग प्रशस्त किया जा रहा है। रेल्वे की सामाजिक उत्तरदायित्व को कम करने का प्रयास नहीं है। वर्ल्ड बैंक से ऋण पर पांच वर्ष का ब्याज कहां से चुकाया जायेगा। बजट में कोई प्रावधान नहीं। यदि प्राइवेट को देना ही तब ब्रांच लाइनों को यात्री गाड़ियों तथा नया ट्रेक कश्मीर, अरुणाचल आदिवासी क्षेत्रों में देने से वर्तमान मार्गों को अपग्रेड किया जा सकता है।

(८) रेल्वे के इंजीनियरिंग तथा कामर्शियल विभागों में भ्रष्टाचार में अंकुश से रेल की आय २०% बढ़ सकती है एवं किराया बढ़ाने, अण्डर पेमेन्ट, भाड़ा कम वसूला जाता है। ट्रेक की लम्बाई बढ़ाकर बताने करोड़ों रुपये आफिसरों एवं ठेकेदारों के पास पहुंच जाता है। एक जांच आयोग बिठाकर अधिकारियों, ठेकेदारों की सम्पत्ति की जांचकर कालाधन जब्त किया जा सकता है। इस तरह के सैकड़ों उपाय कर रेल्वे आन्तरिक

thearyasamaj.org

स्त्रोतों से धन की व्यवस्था हो सकती है। विभिन्न कमेटियों को पूर्व की सिफारिशों पर गंभीरता से अध्ययन करके उनको लागू किया जाय तथा निजीकरण से बचाया जाय।

रेल्वे के सामान्य नियम में सफाई का निरीक्षण का प्रावधान, जनरल मैनेजर से स्टेशन मास्टरों तक है, किन्तु इस कड़ाई से लागू नहीं किया जाता। यात्री कोचों की सफाई कैरिज एवं बैगन विभाग पर हो। निरीक्षण सेनेटरी इंस्पेक्टरों की हो।

रेल कर्मियों के हितों की रक्षा तथा कल्याण की कोई प्रावधान नहीं है। रेल्वे का एच.आर.ओ. बदलने की आवश्यकता है यौवन लाईन के कर्मचारियों के कार्य की अवधि ९.३० घंटे से घटाकर ६ घंटे की जाय एवं समस्त रिक्त स्थान भरे जाय। गैंग कैरेज, आपरेटिंग, कामर्शियल विभागों में स्थानीय ग्रामीम क्षेत्रों के निवासियों से भर्ती की जाय।

पता : आर्यनगर, दुर्ग (छ.ग.) ४९१००१

सांस्कृतिक पुरुषार्थ का महत्व

- प्रो. सुभाषचन्द

हमारे धर्म का महत्वपूर्ण आधार है पुरुषार्थ। इसे मर्दानगी भी कहते हैं। हालांकि इसका साधारण अर्थ काम शक्ति से लिया जाता है। परन्तु इसका अर्थ सामर्थ्य से है। यह हर कार्य क्षेत्र में अलग अर्थ रखती है। इसका वास्तविक अर्थ उद्यमशीलता से है। इसका अर्थ सैनिक के लिये युद्धकला, व्यवसायिक के लिये व्यापार कला उद्यमी के लिये उद्योग, दस्तकार और शिल्पकला के क्षेत्र में दस्तकारी है।

हमारे धर्म में स्वस्थ व्यक्ति के लिये निठल्ले बैठकर खाना प्रतिबंधित है। इस सामान्य जनजीवन में एक मुहावरे के रुप में प्रताड़ित किया गया है। काम का न काज का दुश्मन अनाज का अर्थात् निठल्ला व्यक्ति अनाज का दुश्मन होता है।

इस व्यवस्था के कारण ही हमारे राष्ट्र में उद्योग धंधे फलते फूलते रहे हैं। इसी कारण से हमारा समाज समृद्धिशाली था। समृद्धि के कारण ही यह विदेशियों को आकर्षित करता रहा और हमारे राष्ट्र पर विदेशियों के आक्रमण का केन्द्र रहा है। यूरोप में औद्योगिक क्रांति के कारण हमारे राष्ट्र में अंग्रेज आये और उन्होने योजनाबद्ध तरीके से हमारे उद्योग धंधों को नष्ट कर दिया। इस कार्य के लिये उन्होने शासन-व्यवस्था का दुरुपयोग किया। और हमारे राज्य या तो उनके अधीन थे अथवा इनके षड़यंत्र का शिकार थे।

परन्तु पुरुषार्थ हमारे धर्म का महत्वपूर्ण अंग रहा है। इसके प्रत्यक्ष उदाहरण है विभिन्न त्यौहारों पर की जाने वाली पूजा सरस्वती पूजा शिक्षा के क्षेत्र में, विश्वकर्मा पूजा औद्योगिक जगत में, शस्त्र पूजा, सैन्य क्षेत्रों में लक्ष्मी पूजन, व्यवसाय तथा सामान्य जीवन में। किसी अभियान पर जाने तथा जीतकर आने वाले पर तिलक पूजा इसी सत्य को प्रदर्शित करते हैं।

कृषि क्षेत्र में बैशाखी और होली पूजन एक ही सत्य बताते हमारे राष्ट्र की समृद्धि का कारण यह पुरुषार्थ ही है। राजा कोई भी हो परन्तु हमारे समाज में समृद्धि का अभाव नहीं रहा। अकाल ब्रिटिश राज्य की देन थी।

अन्यथा वर्षा में कमी तो बहुत बार होती रही है। परन्तु अकाल मृत्यु नहीं होती थी। क्योंकि सत्य अथवा धनी लोग अन्न की व्यवस्था धर्म के नाम पर नियमित रुप से करते रहते हैं।

पता - २ डी, WHD हास्टिल सेक्टर, सेक्टर-९, भिलाई ४९०००९

संतोष और अंदर की तृप्ति ही सबसे बड़ा धन है। यह धन ही औरों पर बरसाएँ।

thearyasamaj.org

विचारात्मक

'हमारे माता-पिता और परमात्मा'

- मनमोहन कुमार आर्य

मेरे शरीर के माता-पिता अब इस संसार में नहीं है। उनसे मैंने देहरादून में आज से लगभग ६३ वर्ष पूर्व जन्म पाया था। जन्म ही नहीं अपितु मेरा पालन व पोषण भी उन्होंने किया। माता-पिता निर्धन थे। पिता जी श्रमिक थे। माता धार्मिक गृहिणी परन्तु उन्होंने मेरा इतना अच्छा पालन किया कि आज मैं उन्हें याद कर भावविभोर हो जाता हूं। मुझे लगता है कि यदि वे दोनों और अधिक जीवित रहते तो मैं उनकी कुछ सेवा करता। परन्तु मेरे प्रारब्ध में उनक मुझसे सेवा करवाना शायद नहीं था। जो भी हो, उन्होंने मेरे लिए जो कुछ किए, उसी के कारण मैं आज जो भी हूं, बन सका।मैं उनका सदैव ऋणी रहूंगा। मैं समझता हूँ कि प्रायः सभी मनुष्यों के माता-पिता अपनी सन्तानों के पालन पोषण में अनेकाविध तप करते हैं और सन्तान को सुयोग्य बनाने के लिए अनेक कष्ट उठाते हैं। सन्तान जैसी हो, जितनी ज्ञानी व भौतिक सुविधाों व धन आदि से सम्पन्न हो जाये, उसमें मुख्य माता-पिता व आचार्य एवं अन्य परिस्थितियाँ भी होती है, जिनमें सन्तान या व्यक्ति का प्रारब्ध या भाग्य भी जुड़ा रहता है। अतः सभी सन्तानों को सदैव माता-पिता के प्रति कृतज्ञ रहना चाहिए व उनकी यथाशक्ति व अधिक सेवा-सुश्रुषा करनी चाहिए। वे लोग भाग्यशाली हैं जिनके माता-पिता दीर्घायु तक जीवित रहते हैं और सन्तानों को उनकी सेवा-सुश्रुषा करने का अवसर मिलता है। परन्तु आजकल देखा जा रहा है अंग्रेजी शिक्षा व पद्धति से पढ़कर लोग अपने माता-पिता, अभिभावकों व अन्यों का उचित सम्मानपूर्वक व्यवहार व कर्त्तव्य पालन आदि नहीं करते या उसमें उपेक्षाभाव रखते हैं जो कि अनुचित एवं निन्दनीय है।

बाल्मिकी रामायण में मर्यादा पुरुषोत्तम श्री रामचन्द्र जी द्वारा पिता दशरथ को कही गई ये पक्तियां बहुत मार्मिक है जिसमें उन्होंने कहा कि पिताजी आप अपना कष्ट मुझे कहें। यदि आप जलती चिता में कूदने के लिए भी कहेंगे तो मैं इस पर बिना विचार किये ही चिता में कूद जाऊंगा। यह आदर्श पुत्र की मर्यादा है। क्या हम ऐसे या इसके आस-पास हैं? विचार करें।

माता-पिता से हमारा सम्पर्क या सम्बन्ध पिता व माता के शरीर में हमारी जीवात्मा के आने के साथ होता है। यह जीवात्मा पूर्व जन्म में मृत्यु को प्राप्त होकर कर्मानुसार जिसे प्रारब्ध कहते हैं, माता-पिता के शरीरों में से होता हुआ नियत अवधि में जन्म प्राप्त करता है। जन्म के बाद माता-पिता व परिवारजन मिलकर पालन-पोषण करते हैं, उसकी शिक्षा की व्यवस्था करते हैं, व्यवसाय दिलाने में सहायता करने के साथ विवाह आदि कराते हैं। फिर परिवार में सन्तानों का जन्म होता है और कल के बालक-बालिकायें अब माता-पिता बनकर प्रौढ़ या वृद्ध होने लगते हैं। इस बीच माता-पिता की आयु भी बढ़ रही होती है। कभी किसी को कोई रोग आदि भी हो जाता है और किसी के कम आयु में और किसी के अधिक आयु में अनेकानेक कारणों से समयान्तर पर माता-पिताओं में से एक-एक करके मृत्यु हो जाती है। माता-पिता की मृत्यु के बाद हमारा उनकी आत्माओं से सम्बन्ध समाप्त हो जाता है क्योंकि सम्बन्ध माता-पिता की आत्माओं से था जो कि अन्यत्र नये जन्म की प्राप्ति के लिए जा चुकी होती है। उनके प्रति हमारी आदर बुद्धि तो सदा बनीं रहती है परन्तु उनके प्रति कर्त्तव्य शेष नहीं रहता। उनके प्रति तो हमारे कर्त्तव्य थे वह उनके जीवनकाल में ही थे, यदि हमने अपनी सेवा-सत्कार से उन्हें सन्तुष्ट रखा तो बहुत अच्छा था और किसी कारण नहीं कर सके तो अब उसका परिमार्जन यथोचित नहीं हो सकता। वह तो शरीर त्याग कर जा चुके हैं और ईश्वर की व्यवस्था से उनका कर्मानुसार मनुष्य या अन्य किसी योनि में जन्म हो गया होगा, यही वैदिक सनातन विधान है। अतः माता-पिता की मृत्यु के बाद अन्त्येष्टि से इतर कोई शेष नहीं रहता।

श्राद्ध करना एक अवैदिक कृत्य होता है जिससे

thearyasamaj.org

माता-पिता की आत्माओं को तो कोई लाभ नहीं पहुंचता, इसका समर्थन करने वाले व लाभ उठाने वाले दूसरे होते हैं जो अपने यजमान को अवैदिक कृत्य कराके अपना स्वार्थ सिद्ध करते हैं जिसका परिणाम भी वैदिक कर्म-व्यवस्था के अनुसार इनके प्रति भी अच्छा होने वाला नहीं है। अज्ञानता व स्वार्थ के कारण ही यह सब आजके वैज्ञानिक व आधुनिक युग में भी चल रहा है। महर्षि दयानन्द के अनुयायी ऐसे अवैदिक कृत्यों से बचे हुए हैं, यह ऋषि दयानन्द की हम पर बहुत बड़ी कृपा है।

माता-पिता की सत्ता की तरह ही ईश्वर की भी सत्ता है जो माता-पिता के ही समान किंवा कहीं अधिक हमसे प्रेम करती है व हमारा अधिकतम् उपकार करती है। वह सत्ता सर्वव्यापक है अतः सदैव हमारे साथ हमारे अन्दर व बाहर, हममें ओत-प्रोत है। हमारी तरह ही वह भी चेतन सत्ता है। हम व वह, दोनों ही नित्य, अनादि, अनुत्पन्न, अजन्मा, अमर, अविनाशी है। ईश्वर सर्वज्ञ व सर्वव्यापक होने से सदा शुद्ध-बुद्ध व मुक्त है तथा हमें उसके सान्निध्य से सत्कर्मों के द्वारा शुद्ध, बुद्ध व मुक्त होना है। हमारे प्राचीन ऋषि-मुनि-योगी-ज्ञानी-याज्ञिक आदि अपना जीवन ईश्वर को अध्ययन व उपासना द्वारा प्रसन्न कर उसकी सहायता से जीवन को सद्कर्मों व अपवर्ग प्राप्त कराने में लगते थे। उनकाजीवन त्यागपूर्ण होता था। वह आध्यात्मिक ज्ञान की साधना करते थे और उसका प्रचार व प्रसार कर समाज,देश व विश्व का कल्याण करते थे। महाभारत काल तक के सृष्टि के लगभग २ अरब वर्षों तक उनका कार्यों के कारण विश्व भूगोल में सर्वत्र शान्ति का साम्राज्य था।

संसार में केवल एक ही मत था जिसे हम वैदिक धर्म के नाम से जानते हैं। समय ने करवट ली, पांच वर्ष पूर्व महाभारत का युद्ध हुआ। देश-विदेश के योद्धा इसमें वीरगति को प्राप्त हुए। देश-देशान्तर में अव्यवस्था फैल गई और सद्ज्ञान वेद का प्रचार-प्रसार का कार्य अवरुद्ध हो गया। अज्ञान का अन्धकार बढ़ता गया। क्या देश और क्या देशान्तर सर्वत्र घोर अज्ञानान्धकार छा गया। ऐसे समय में नाना प्रकार के अवैदिक मतों की सृष्टि हुई और भोले-भाले मनुष्य उनके अनुयायी बनकर उनके सत्यासत्य विचारों व मान्यताओं का अनुकरण करने लगे। अज्ञानता के कारण मनुष्यों की स्वार्थ, काम, क्रोध, लोभ, मोह, राग, द्वेष आदि की वृत्तियाँ भी बढ़ती गई और लोग इन्हीं में सुख की अनुभूति करने लगे। इसका परिणाम मध्यकाल का निकृष्टतम समय रहा जहां अज्ञान, मिथ्याविश्वासों, सामाजिक, असमानता व कुरीतियों आदि का सर्वत्र प्रसार देखने को मिलता है। अनके युगों के बाद ईश्वर की कृपा से महर्षि दयानन्द का आगमन होता है। उनके हृदय में सच्ची जिज्ञासायें उत्पन्न होती हैं। वह उनके समाधान के लिए कमर कसते हैं और अपूर्व पुरुषार्थ व प्रयत्नों के बाद वह उस ज्ञान वेद व उसके सत्य अर्थों की खोज करने में सफल होते हैं, जिससे सारे विश्व में स्वर्ग की स्थापना की जा सकती थी। वह अपने जीवन में जितना कुछ कर सकते थे, उससे अधिक ही करने का प्रयास किया व किया भी।

अब देश व विश्व को स्वर्ग बनाने का कार्य हमारे ऊपर है। हमें लगता है कि हम व हमारे देश के लोग इस कार्य के लिए पात्र नहीं है। हम निजी स्वार्थों में फंसे हुए हैं। हम अज्ञान को दूर कर प्रकाश में जाना ही नहीं चाहते। इसमें हमारे मत-मतान्तरों के नेता व अन्य स्वार्थी प्रभावशाली लोग हैं जिनकी बुद्धि अज्ञान तिमिर से आच्छादित, विकृत व कुण्ठित कह सकते हैं, वह भी इस सत्कार्य के विरोधी हैं। ईश्वर की कृपा होगी तो आने वाले युगों में महर्षि दयानन्द का रह गया शेष कार्य अवश्य पूरा होगा। इसके लिए जो अपेक्षित होगा वह ईश्वर करेगा।

ईश्वर हमारा माता व पिता दोनों हैं। वह हमारा बन्धु भी है और सखा भी है। उसी के आधार पर हमारा यह जीवन है। इस जीवन से पूर्व भी हमारे असंख्य जीवन रहे हैं और भविष्य के भी निरन्तर मिलने वाले जीवन उसी के आधार व सहाय पर होंगे। हमें उसे उसके यथार्थ रुप में जानना है। उसके जानने के लिए वेद व वैदिक साहित्य तो है परन्तु जनसामान्य सत्यार्थ प्रकाश, ऋग्वेदादि भाष्य भूमिका, आर्याभिविनय आदि ग्रन्थों की सहायता से उसे यथार्थ रुप में जान सकता है। उसने जानकर उसकी स्तुति, प्रार्थना, उपासना करके व यज्ञ-अग्निहोत्र आदि से समाज को स्वस्थ व सुखी रखना हमारा कर्त्तव्य बनता है। ईश्वर की स्तुति-प्रार्थना-उपासना ऐसी ही है जैसे के एक सन्तान अपने माता-पिता को

thearyasamaj.org

सुखी व सन्तुष्ट करने के लिए उनकी सेवा व सत्कार करती है जिसके पीछे हमारे माता-पिता के हमारे प्रति किये गये पालन-पोषण आदि कार्य है। ईश्वर के उपकारों का धन्यवाद करने हेतु कृतज्ञतास्वरुप स्तुति-प्रार्थना-उपासना करने का विधान है। परमात्मा क्योंकि अशरीरी है और निराकार स्वरुप से सर्वव्यापक होने से हमारी भीतर व बाहर है, अतः उसकी स्तुति-प्रार्थना-उपासना करना हमारा कर्त्तव्य बनता है। आईये, ईश्वर को जाने। वह हमारा सदा-सदा का साथी, माता-पिता-बन्धु-बान्धवों से अधिक हितकारी है। महर्षि दयानन्द रचित सन्ध्या के वेद मन्त्रों से मन को एकाग्र कर ध्यान में बैठकर उसकी उपासना कर उसे प्रसन्न व अपने अनुकूल करें और वेदों का प्रचार-प्रसार कर समाज, देश व विश्व के कल्याण में अपना योगदान करें।

पता : १९६, चुक्खूवाला-२, देहरादून-२४८००१

"सर्वोपरि महर्षि दयानन्द"

- खुशहालचन्द्र आर्य

ऋषिवर, तेरी तुलना नहीं हो सकती, किसी एक व्यक्ति महान से।
तेरी तुलना तो हो सकती है, सूर्य, चन्द्रमा, पृथ्वी और आसमान से ॥
तेरी तुलना मैं श्रीराम से करूँ, वह कृष्णा जैसा था कूटनीतिवान नहीं,
तेरी तुलना करूँ, कृष्ण से, उसने रखा मर्यादा का इतना ध्यान नहीं,
दयानन्द, तेरे अन्दर दोनों के समस्त गुण, पाये जाते हैं समान से .... १.

तेरे तुल्य मैं समझूँ बुद्ध को, वह आदि शंकर जैसा था विद्वान् नहीं,
तेरी तुलना करूँ शंकर से, वह बुद्ध जैसा मिला दयावान नहीं,
तेरे अन्दर दोनों के गुण थे, कह सकते हैं हम स्वाभिमान से ...... २.

तेरी तुलना करूँ मैं भीम से, उसने रखा ब्रह्मचर्यव्रत महान् नहीं,
तेरी तुलना करूँ भीष्म से, उसने अन्याय पक्ष लेकर रखा अपना सम्मान नहीं,
दोनों के गुण विद्यमान् थे, पता लगता है आपके व्यक्तित्व महान् से ... ३.

तेरी तुलना करूँ कालिदास से, उसमें चाणक्य जैसा था देश स्वाभिमान नहीं,
तेरी तुलना करूँ चाणक्य से, उसमें मिलता सहनशीलता गुण प्रधान नहीं,
दोनों के गुण पाये जाते, आपका जीवन चरित्र पढ़ते हैं जब ध्यान से ....४.
ऋषिवर, तेरी तुलना नहीं हो सकती,........।

तेरी तुलना करूँ केशव सेन से, जिसमें भारतीय संस्कृति पर था स्वाभिमान नहीं,
तेरी तुलना करूँ गांधी से, जिसने सोचा तुष्टीकरण का परिणाम नहीं,
दोनों के गुण भली-भांति जाने जाते, आपके किये जन-कल्याणी काम से ...५.

"खुशहाल" ने खोज लिया सारा इतिहास, इस प्यारे देश की शान का,
कोई भी महापुरुष पाया नहीं, ऋषि दयानन्द के चरित्र के समान का,
अब इच्छा होती है, तुलना करूँ, दयानन्द का दयानन्द समान से ... ६
ऋषिवर, तेरी तुलना नहीं हो सकती,.....।

ooo--ooo

पता : गोविन्दराम आर्य अण्ड सन्स ९८०, महात्मा गांधी रोड
(जे तल्ला) कोलकाता-७००००७

thearyasamaj.org

वैचारिक "माँ, कभी नहीं मरती"

- देवेन्द्र कुमार मिश्रा

ये मेरे दिमाग का कन्फ्यूजन था या इसमें कोई गहरा रहस्य छिपा था। ये बात मेरी आज तक समझ में नहीं आई। माँ की मृत्यु की तारीख पिताजी और परिवार वाले २६-४-१९८७ बताते हैं। जबकि मेरे हिसाब से मेरी माँ १९९० तक मेरे साथ रही। मेरे कहने पर कि माँ १९९० की शाम तक माँ मेरे साथ थी। इस बात पर सभी मुझपर हंसते भी हैं और कभी-कभी क्रोध भी करते हैं। मैं उस समय ७ या ८ वर्ष का होऊंगा। जब पिता ने मुझसे कहा था कि तुम्हारी माँ अभ नहीं रही। मेरे बड़े भाई की उम्र मुझसे १० वर्ष ज्यादा थी। बीच में दो बहने थी। आज मेरी उम्र ३५ वर्ष है। मेरा अपना परिवार है, बच्चे हैं। अच्छी खासी अमेरिका में नौकरी है। मुझे ठीक से कुछ याद नहीं। बस इतना याद है कि घर में मौत हुई तो थी। मां लेटी हुई थी। सभी विलाप कर रहे थे। हो सकता है पड़ोस की किसी महिला की मृत्यु हुई हो। मैं छोटा था। मुझे केवल एक बार मृत पड़ी माँ का चेहरा दिखाकर अन्दर ले जाया गया था। लेकिन ये कोई षड़यन्त्र था। मुझे सुधारने के लिए पिताजी की कोई चाल थी। मुझे याद पड़ता है कि बचपन में जब पहली क्लास में मेरा नाम लिखा था। मुझे बाहर खड़ी क ख ग रटाते वक्त पिताजी छड़ी से पीट दिया करते थे। मेरे रोने की आवाज सुनकर माँ दौड़कर किचन से अपना काम छोड़कर आ जाती और मुझे अपनी गोद में लेकर पिताजी पर बिफर पड़ती।

"खबरदार अगर मेरे बच्चे को हाथ लगाया। भाड़ में गई तुम्हारी पढ़ाई। धीरे-धीरे सीख जायेगा। अभी छोटा है।" मैं माँ के सीने से लगकर रोता रहता। माँ मुझे गोद में लेकर चुप कराने के लिए कभी चाकलेट देती। कभी आईस्क्रीम खरीदकर खिलाती। पिताजी, माँ से कहते। इसे इतना लाड-प्यार मत करो। नहीं तो बिगड़ जायेगा। यही इसके सीखने की उमर है। लेकिन माँ को बिलकुल बर्दास्त नहीं था कि कोई उनके बेटे पर हाथ उठाये। जब मेरे बड़ी भाई और बहिन पैदल स्कूल जाते। तब भी मुझे माँ ही गोद में उठाकर मेरा स्कूल का बस्ता अपने कंधे पर टांग कर ले जाती। वापिसी में भी माँ ही मुझे स्कूल से लाती। घर पहुंचते ही मैं स्वच्छन्द हो जाता। जूते उतारकर फैंकता। फिर मोजे उतरवाकर हवा में उछालता। स्कूल की ड्रेस उतारकर फेंकता। मां सब फेंके हुए सामान उठा-उठाकर रखती। माँ ही मुझे ब्रश करवाती। मां ही मुझे नहलाती। माँ ही अपने हाथ से मुझे खाना खिलाती। मैं जिद करत कि आइस्क्रीम खिलाओं तभी खाना खाऊंगा। मां मुझे गोद में बिठाकर कहती। पहले मेरा बेटा खाना खायेगा। उसके बाद आइस्क्रीम। फिर तो ये हो गया कि मैं अपनी शर्तों पर पढ़ता। खाना खाता। जब दरवाजे पर से आइस्क्रीम वाला निकलता। मैं माँ को आवाज देता। माँ दौड़कर आती और पल्लू में बंधे पैसे निकालकर आइस्क्रीम वाले को देती। कभी-कभी आइस्क्रीम वाला दूर निकल जाता। माँ को अन्दर से बाहर आने में देर हो जाती। मैं रोने लगता। मां मुझे गोद में उठाकर ले जाती और तेज कदमों से चलती हुई आइस्क्रीम वाले को रोकती और मुझे आइस्क्रीम मिल जाती।

एक दिन मैंने रोते हुए माँ से कहा - "मुझे स्कूल टीचर ने छड़ी से मारा है।" माँ ने स्कूल में घुसकर मास्टर की छड़ी छीनकर मास्टर को उसी छड़ी से पीटना शुरु कर दिया। ये कहते हुए कि बच्चों को पढ़ने भेजते हैं। पीटने नहीं। मास्टर पिटता रहा और मैं खुश होता रहा। लेकिन इस घटना के बाद पिताजी माँ पर खूब नाराज हुए। मेरे साथ मेरे भाई-बहिनों का नाम भी स्कूल से काट दिया गया। बड़े भाई और बहिन भी इस बात से गुस्सा थे कि माँ को स्कूल जाकर टीचर को पीटने की क्या जरुरत थी। सब इस बात से नाराज थे कि माँ मुझे कुछ ज्यादा ही लाड करती है। पिताजी ने तो ये तक कहा कि तुम बच्चे का भविष्य बर्बाद कर रही हो। मेरे बड़े भाई और दो बहिनों का नाम तो फिर से उसी स्कूल में लिख गया, लेकिन मेरा नाम पास के स्कूल में दर्ज करवाया गया।

पिताजी ने माँ से कहा - "इसे अपना काम स्वयं

thearyasamaj.org

करने दो। ये कब तक सीखेगा। सात साल का हो गया। इसे कुछ नहीं आता।" लेकिन माँ का एक ही उत्तर होता अभी छोटा है। सब सीख जायेगा। पिताजी ने मुझे पीटा तो नहीं कभी। लेकिन कुछ सख्त नियम बना दिये कि मैं अलग कमरें में सोऊंगा। दो घंटे रोज पढूंगा। अलग अकेले कमरे में मुझे डर भी लगता था और मां के बिना नींद भी नहीं आती थी। जब तक माँ मेरे सिर पर हाथ फेरते हुए थपकी देकर न सुलाती। पिताजी के इतने अनुशासन के बाद भी माँ कब मेरे कमरे में आ जाती। किसी को पता नहीं चलता। फिर माँ मुझे अपने सीने से लगाकर परियों की कहानी सुनाते हुए थपकी देती और मैं सो जाता।

शायद माँ की मृत्यु में मेरा भी हाथ था। एक दिन मैंने पिताजी की जेब से दो रुपये चुराये थे। पिता ने सबसे पूछा। डांटा फटकारा। मेरा नम्बर आया तो मैं रोने लगा पिताजी की डांट सुनकर। पिताजी ने अपनी छड़ी से मुझे मारा। माँ ने दौड़कर मुझे सीने से लगाते हुए कहा - "मेरा बेटा चोरी कर ही नहीं सकता।"

पिताजी ने मुस्से में कहा -" क्या बाकी तुम्हारे बच्चे नहीं है।" माँ ने कहा वे बड़े हैं। समझदार है। बन्टी अभी छोटा है।" फिर मां ने पिताजी को विश्वास दिलाने के लिए मेरा हाथ अपने सिर पर रखते हुए कहा - "चल बेटा अपनी माँ की कसम खाकर बोल दो तूने पैसे नहीं चुराये" मैंने कसम खा ली। मैं बच गया। लेकिन कुछ दिनों के बाद माँ बीमार रहने लगी। धीरे-धीरे उन्होंने बिस्तर पकड़ लिया। डॉक्टर ने बीमारी को लाइलाज बताया। बीमारी में भी माँ मेरा पूरा काम करती। मेरी माँ ठीक हो जाये इसके लिये मैंने मंदिर जाकर भगवान के पास चोरी किये हुए पैसे भगवान के चरणों में रख दिये और उनसे क्षमा मांगते हुए कहा - "भगवान, झूठी कसम की सजा मेरी माँ को मत दो। मेरी माँ को ठीक कर दो। मैं अपनी मां के बिना नहीं रह सकता।" भगवान ने मेरी नहीं सुनी। मां को ले जाया गया दाह संस्कार के लिये। लेकिन मुझे लगा कि मुझे सबक सिखाने के लिए पिताजी ये सब कर रहे हैं। मेरी माँ कैसे मर सकती है। लेकिन माँ नहीं दिखी। मेरे रोने पर पिताजी ने डांटते हुए कहा - "तुम्हारी मां मर चुकी है। अब अपने सारे काम खुद किया करो।" मैं न ठीक से दांत साफ कर पाता। न कपड़े बदल बाता। खाना जो मिल गया। खाना पड़ता। आइस्क्रीम की आवाज सुनकर माँ को आवाज देता लेकिन मां कहां से आती। मैं बिलख-बिलख कर रोता। ऐसा नहीं कि मेरे पिता भाई या बहनें, माँ की याद में रोते न हो। उन्हें भी माँ के मरने का दुख था। किन्तु वे समझदार थे। मैं छोटा था। मुझे मां की जरुरत थी। मैं अकेला नहीं सो सकता था। मुझे माँ के बिना नींद नहीं आती थी। हालांकि पिताजी के कहने पर मेरा भाई और दोनों बहनें मेरा ध्यान रखती थी, लेकिन माँ की जगह तो कोई नहीं ले सकता था। मुझे स्कूल ड्रेस पहनने, स्कूल का बस्ता जमाने, जूते के फईते बांधने नहीं आते थे। इन छोटे-छोटे कामों में स्कूल में लेट होता तो वहां डांट पड़ती। कभी-कभी मार भी। मेरे लिए जीवन असहनीय हो चुका था। उस छोटी सी अवस्था में।

एक दिन घर के सभी लोग पड़ोस के कार्यक्रम में गये हुए थे। मैं घर में अकेला था। मैं अपने तकिये को माँ मानकर उससे लिपटकर सोने की कोशिश कर रहा था। मैं नींद में बिस्तर से गिर गया और रोने लगा। तभी माँ आ गई। मुझे विश्वास नहीं हुआ। माँ ने प्यार से समझाते हुए उठाकर बिस्तर पर लिटाते हुए कहा - "ठीक से सोना भी नहीं आता।" मैं जोर से माँ से लिपटकर रोने लगा। "माँ तुम मुझे छोड़कर कहां चली गई थी। क्यों गई थी ?" मैंने माँ के सीने पर अपने नन्हें हाथों से घूसे मारकर अपना गुस्सा प्रगट किया। माँ ने मुझे अपने सीने से लिपटाते हुए कहा - जब तक तुम सब सीख नहीं जाते। तक तक माँ कहीं नहीं जायेगी।

"माँ, सब कह रहे थे तुम मर गई हो"।

" धत्, पगले, माँ भी मरती है क्या ? लेकिन किसी को बताना नहीं। मैं चुपके से तुम्हें पढ़ाऊंगी भी। सिखाऊंगी भी। तुम्हारे कमरें में आऊंगी। पर वादा करो अब से मेरा राजा बेटा चोरी नहीं करेगा। झूठी कसम नहीं खायेगा।"

" नहीं करुंगा मां। मुझे माफ कर दो। मुझे छोड़कर मत जाना।" "ठीक है।" माँ ने कहा - "लेकिन किसी को बताना मत। अपने पिता को भी नहीं।" "भाई-बहिनों को भी नहीं।" " हाँ माँ, नहीं बताऊंगा।"

और फिर मां मेरे सामने रहती हर वक्त। उन्होने मुझे

thearyasamaj.org

ब्रश करना सिखाया। नहाने के बाद कपड़े बदलना सिखाया। मुझे मेरे कमरे में बढ़ाती। जो नहीं बनता वो सिखाती। माँ मुझे आइस्क्रीम लाकर देती। जो खाना दीदी, भैया मिलकर बनाते। उसे मैं अपने कमरे में ले जाता। माँ मुझे अपने हाथों से खिलाती भी और स्वयं खाना भी खाती। मोजे कैसे सीधे पहने जाते हैं। जूते की लैस कैसे बांधी जाती है। माँ सिर्फ मेरे कमरे में आती। मां के कारण मैं अधिकतर समय अपने कमरें में बिताता। घर के बाकी सदस्यों को मेरे सब कुछ सीखने पर आश्चर्य भी हुआ और इस बात पर भी कि मैं अपने कमरे में ही ज्यादातर रहता हूँ। इस पर पिता का तर्क था कि कुछ बच्चे अन्तरमुखी और एकान्तप्रिय होते हैं। शायद बन्टी उन्हीं में से है। माँ मुझसे कहती तुम पलंग पर सोओ। मैं नीचे सोती हूँ। अकेले सोने की आदर डालो। जब मैं नहीं रहूंगी तो तुम क्या करोगे ? लेकिन जब मुझे नींद नहीं आती या डर लगता तो मैं माँ के पास लिपटकर सो जाता। इस तरह मैं १० वर्ष का हो गया। सारे काम सीख गया। अब मेरे कुछ दोस्त भी बन गये थे। मैं बाहरी दुनियाँ से भी जुड़ चुका था। अब अकेले में भी मुझे नींद आ जाती।

एक रोज पिता ने निर्णय लिया कि मैं पांचवी पास हो चुका हूं। मेरी अच्छी शिक्षा के लिए मुझे अंग्रेजी माध्यम के बोर्डिंग स्कूल में डाला जाये। मेरे मुंह से तुरन्त निकला, मैं नहीं जाऊंगा। मैं माँ के पास रहूंगा। मैं कमरे में माँ-माँ कहते हुए चला गया। सभी को आश्चर्य हुआ कि मैं अभी तक मां को नहीं भूला हूं। वो २६ अप्रेल १९९० की शाम थी। जब माँ ने मुजे समझाया कि अपनी मां की बात मानेगा। प्यारा बेटा। ऊंचा अफसर बनकर माँ का नाम रोशन करेगा। जा बेटा मन लगाकर पढ़ना। नये-नये दोस्त मिलेंगे। तुम्हारी माँ की खुशी भी इसी में है। अपने पिताजी का कहना नहीं टालते। वे तुम्हारे भले के लिए कह रहे हैं।

मैंने मना किया तो माँ ने कहा - "जाओ, मैं तुमसे बात नहीं करती" माँ का मन रखने के लिए मैं चला गया शाम की ट्रेन से अपने भाई के साथ। मेरा भाई पहले से वहीं पढ़ता था। इस बीच मैंने अपनी बहनों से अपने पिता से कई बार फोन पर पूछा और तब भी जब पिता बोर्डिंग स्कूल में मिलने आते। माँ नहीं आई। माँ कैसी है ?" पिता मुझे धीरज बंधाते हुए कहते - बेटा तुम्हारी माँ तो कब का हमें छोड़कर चली गई है।"

"अच्छा माँ नहीं रही। भगवान के पास चली गई है।" "हाँ, बेटा - पिताजी नम आंखों से कहते।"

मुझे यही लगा कि मेरे बोर्डिंग स्कूल आने के बाद माँ की मृत्यु हो गई थी। मैं बहुत रोया। मेरे भाई ने समझाया- "मां तो कब की मर चुकी है। तुम तो ऐसे रो रहे हो, जैसे अभी मरी है।" इस बीच में कई बार घर गया। माँ को नहीं पाया। मैं सब दुनियादारी जान चुका था। सीख चुका था। मैं समझ गया था कि माँ अब इस दुनियां में नहीं रही। लेकिन माँ १९९० में स्वर्गवासी हुई। ऐसा मेरा विश्वास था। लेकिन घर में सबसे पूछने पर एक ही उत्तर मिलता, तुम उस समय छोटे थे इसलिए सन् तुम्हें याद नहीं रहा हो ठीक से।

मैंने अपनी बड़े भाई से कहा- मैं बोर्डिंग स्कूल किस सन् में गया था। आपको याद है। भाई ने थोड़ा जोर लगाया दिमाग पर और कहा १९९० में। मैंने फिर भाई से पूछा - माँ की मौत किस सन् में हुई। उन्होंने कहा - १९८७ में। मैंने कहा- लेकिन बोर्डिंग स्कूल जाने वाले दिन माँ मेरे साथ थी। बल्कि मां के समझाने पर ही ... भाई ने बीच में टोकते हुए कहा - दिमाग मत खाओ। अपना कन्फ्यूजन दूर करो। हम सब पागल हैं क्या ?

पिताजी से जब यही बात कही तो उन्होंने कहा - "अपनी माँ के लाडले थे न और सबसे छोटे भी घर में। इसलिए भ्रम रह गया मस्तिष्क में। मां के गुजर जाने के बाद भी अपने आपको माँ से अलग नहीं कर पाये थे। इसलिए देर तक मां की स्मृति बनी रही तुम्हारे मस्तिष्क में। बचपन में कभी-कभी तुम हरकतें भी ऐसी करते थे जैसे माँ तुम्हारे साथ हो। लेकिन मरने वाले फिर नहीं आते।"

मैंने मन ही मन कहा - माँ कभी नहीं मरती। बचपन की बात है। शाद १९८७ की हो औरों के लिए। लेकिन मेरे लिए माँ २६-४-१९९० तक जीवित रही। शायद वे जानती थी कि मुझे उस समय मां की जरुरत थी। लोगों के लिए वह मेरा वहम हो या मस्तिष्क की स्वयं को बहलाने के लिए मां को जिन्दा रखा हो छिपा के। दिमाग की अपरिपक्वता। चिकित्सक ने तो ये भी कहा कि आप ८७ और ९० में इतना

thearyasamaj.org

मत उलझिये, नहीं तो दिमाग पर असर पड़ सकता है। आप अकेले सही कैसे हो सककते है। आप पढ़े-लिखे समझदार विज्ञान, तकनीक से जुड़े हुए अमेरिका में नौकरी करने वाले व्यक्ति हैं। जब तक आपको माँ की जरुरत महसूस हुई। आपने उन्हें महसूस किया और जीवित समझा। ये भी हो सकता है कि आपके दिमाग में ये बात हो कि आपकी झूठी कसम खाने के कारण आप अपनी माँ की मौत का स्वयं को जिम्मेदार मानते हो। इसलिए आपने स्वयं को बहलाने के लिए माँ को जिन्दा रखा हो दिमाग में।

सरकारी कागज से लेकर घर-परिवार, रिश्तेदार, आस-पड़ोस के सभी व्यक्ति कह रहे हैं कि आपकी माँ की मृत्यु १९८७ कह रहे हैं। फिर इससे क्या फर्क पड़ता है। अब तो आपकी मां नहीं है न। हाँ शायद मुझे कुछ कन्फ्यूजन हो या .... खैर मैं अब भी मानता हूं कि मां की मृत्यु १९९० में हुई। वे मरने के बाद भी ३ वर्ष तक मेरे साथ रही। इसे लोग मेरा पागलपन या कुछ भी। हो सकता है कि मैं माँ को महसूस करता रहा हूँ। हो सकता है कि मां १९८७ में ही दुनियां छोड़ चुकी हो। मरने वाले तो लौटकर आते नहीं। मुझे सारे रिकार्ड देखने के बाद सबके बताने पर तथ्यों सबूत सहित मानना पड़ा कि मां १९८७ में ही खत्म हो चुकी थी, लेकिन पता नहीं क्यों जब भी कोई मां के देह त्याग की तारीख पूछता तो न चाहते हुए भी मेरे मुंह से निकल जाता है २६-४-१९९०। मेरे बोर्डिंग स्कूल जाने वाले दिन। *पता : पाटनी कालोनी, भरत नगर, चन्दनगांव, छिन्दवाड़ा (म.प्र.) ४८०००१*

कविता

"वास्तविक घर"

और जो कुछ भी है
संसार में
ईश्वर के अलावा
वो सब तीन घंटे
की फिल्म है
एक शानदार ड्रामा है
एक बहुत बड़ा पागलखाना है
तुम्हारे दुख
तुम्हारे सुख
मन के खेल
निकाल रहे हैं तुम्हारा खेल
और तुम फिर भी
मरे जा रहे हो
चलचित्र दुनियां के लिए
जहां सब सतत् चल रहा है
निकल रहा है
भाग रहा है
तुम्हारी उम्र, तुम्हारा शरीर
तुम्हारी दुविधायें सुविधायें
सब चलते चित्र है
स्थाई है तो ईश्वर
सत्य है तो ईश्वर
उन्हीं की शरण
जीवन का सद्मार्ग
छोड़ो सारे कुमार्ग
मेले देखो
लेकिन माधव को मत भूलो
परमात्मा ही वास्तविक घर है।

लेखक : देवेन्द्र कुमार मिश्रा
पाटनी कालोनी, भरत नगर, चन्दनगांव, छिन्दवाड़ा (म.प्र.) ४८०००१

thearyasamaj.org

पुण्य स्मरण हुतात्मा महाशय राजपाल की बलिदान-गाथा

बलिदान दिवस ६ अप्रैल पर विशेष

• विश्वनाथ •

सन् १९२३ में मुसलमानों की ओर से एक पुस्तक उन्नीसवीं सदी का महर्षि प्रकाशित हुई। यह पुस्तक महर्षि दयानन्द का बहुत घिनौना तथाअपमानजनक चित्रण था। उन्हीं दिनों मुसलमानों ने श्रीकृष्ण महाराज के सम्बन्ध में भी एक आपत्तिजनक पुस्तक प्रकाशित की। पुस्तक का नाम था "कृष्ण, तेरी गीता जलानी पड़ेगी।" पुस्तक के नाम से ही समझ सकते हैं कि इसमें क्या था। महाशय, राजपाल, महर्षि दयानन्द और योगेश्वर कृष्ण का अपमान नहीं सकते थे। उन्होने पुस्तक का उत्तर से देना उचित जाना। इन घिनौनी पुस्तकों का उत्तर देने के लिए १९२४ में 'रंगीला रसूल' प्रकाशित की।

यह पुस्तक उर्दू में थी जिसमें मुसलमानों के पैगम्बर हजरत मुहम्मद साहब की जीवनी व्यंग्यात्मक शैली में दी गई थी, परन्तु घटनाएँ सभी इतिहास-संमत और प्रामाणिक थीं। पुस्तक में लेखक के नाम के स्थान पर 'दूध का दूध और पानी का पानी' छपा था। वास्तव में पुस्तक के लेखक पं. चमूपति एम.ए. थे जो आर्यसमाज के श्रेष्ठ विद्वान् एवं बाद में गुरुकुल कांगड़ी के आचार्य बने थे। वे महाशय राजपाल जी के अभिन्न मित्र थे, उनकी अनेक पुस्तकें राजपाल जी प्रकाशित कर चुके थे। मुसलमानों की ओर से सम्भावित प्रतिक्रिया के कारण चमूपति जी इस पुस्तक पर अपना नाम नहीं देना चाहते थे। उन्होंने महाशय राजपाल जी से यह वचन ले लिये कि चाहे कितनी भी विकट परिस्थिति क्यों न बने वे किसी को भी इस पुस्तक के लेखक के रूप में उनका नाम नहीं बताएँगे। महाशय राजपाल जी ने इस वचन की रक्षा अपने प्राणों की बलि देकर की। चमूपति जी पर जरा भी आँच नहीं आने दी।

सन् १९२४ में यह मुकदमा शुरू हुआ और सन् १९२९ में राजपाल जी का बलिदान हुआ। इन पाँच वर्षों में उन्हें अनेक बार यह कहा गया कि आप असली लेखक का नाम बता दें तो हमें आपसे कोई शिकायत नहीं रहेगी। यह बात उस जमाने के प्रमुख मुस्लिम दैनिक-पत्र जमींदार में प्रकाशित हुई परन्तु महाशय राजपाल जी ने एक ही बात दोहराई कि इस पुस्तक के लेखन तथा प्रकाशन की पूरी जिम्मेदारी मेरी ही है, अन्य किसी को नहीं। उन्होने जो वचन दिया उसे अन्त तक निभाया।

पुस्तक बिकती रही परन्तु उसके विरुद्ध कोई शोर न मचा। फिर हुतात्मा गांधी ने अपनी मुस्लिम-परस्त नीति में इस पुस्तक के विरुद्ध एक लम्बी टिप्पणी लिख दी। बस फिर क्या था, एक ओर कट्टरवादी मुसलमानों और मुल्लों ने राजपाल जी के विरुद्ध आंदोलन छेड़ दिया, दूसरी ओर सरकार ने उसके विरुद्ध सन् १९२३ में १५३(अ) धारा के अधीन अभियोग चला दिया। अभियोग चार वर्ष तक चलता रहा। राजपाल जी को छोटे न्यायालय ने डेढ़ वर्ष का कारावास तथा एक सहस्र रुपये जुर्माने का दण्ड सुनाया गया। इस आदेश के विरुद्ध सैशन में अपील करने पर कारावास के दण्ड में एक वर्ष की कटौती कर दी गई। इसके पश्चात् अभियोग हाईकोर्ट में गया। हाईकोर्ट के माननीय न्यायाधीश कँवर दिलीपसिंह ने महाशय राजपाल को ससम्मान दोषमुक्त कर दिया।

पहला प्रहार

मुसलमान इस निर्णय से भड़क उठे और उन्होंने राजपाल जी के विरुद्ध जानलेवा आन्दोलन छेड़ दिया, जिसके फलस्वरुप २६ सितम्बर १९२७ को उन पर खुदाबख्श नामक एक मुसलमान ने उनकी दुकान पर जो हस्पताल रोड पर स्थित थी, प्राणघातक आक्रमण किया। आक्रमणकारी एक पहलवान था। उसके हाथ से महाशय राजपाल के जीवन की सुरक्षा की कोई आशा न थी। परन्तु मारने वाले से बचाने वाला महाबली होता है, यह लोकोक्ति इस प्रसंग में सत्य सिद्ध हुई और स्वामी स्वतंत्रतानन्द जी महाराज और स्वामी वेदानन्द जी जो दैवयोग से वहाँ उपस्थित थे, उन्होने घातक को ऐसा कसकर दबोचा कि वह अपने क्रूरतापूर्ण निश्चय में सफल न हो सका। तथापि

thearyasamaj.org

महाशय राजपाल बहुत बुरी तरह घायल हुए। घातक के विरुद्ध अभियोग चला और उसे सात वर्ष के कारावास का दण्ड मिला।

स्वामी सत्यानन्द जी पर आक्रमण

महाशय राजपाल अपने घावों के कारण अस्पताल में ही थे कि उसी दुकान पर जिसमें महाशय राजपाल जी को घायल किया गया था, स्वामी सत्यानन्द जी बैठे थे। रविवार, ८ अक्टूबर १९२७ को अब्दुल अजीज नामक एक मुसलमान ने उन्हें महाशय राजपाल समझ कर पीछे से, एक हाथ से चाकू व दूसरे हाथ में उस्तरे से प्राणघातक प्रहार कर दिया। घातक स्वामी जी घायल करके भागना ही चाहता था कि अद्भुत शौर्य का प्रदर्शन करते हुए पड़ोसी दुकान वाले महाशय नानकचन्द जी कपूर ने हत्यारे को पकड़ने का यत्न किया। इस प्रयास में वे भी घायल हो गए। उनकी पकड़ से घातक निकलना ही चाहता था कि महाशय नानकचन्द जी के छोटे भाई लाला चूनीलाल जी उस पर लपके और उसे पकड़ने का यत्न किया। उन्हें भी घायल करता हुआ हत्यारा भाग लिया परन्तु चौक अनारकली में उसे दबोच लिया गया। उसे चौदह वर्ष के कठोर कारावास का दण्ड और तदनन्तर तीन वर्ष के लिए शान्ति की गारण्टी का दण्ड सुनाया गया।

अंतिम प्रहार :-

महाशय जी गुरुकुल कांगड़ी के वार्षिकोत्सव पर गए हुए थे। वहाँ से पांच अप्रैल को लाहौर लौटे। ६ अप्रैल १९२९, शनिवार के दिन दोपहर के समय वे अपनी दुकान में आराम कर रहे थे। उनका एक कर्मचारी पुस्तकों को व्यवस्था से रख रहा था। इल्मदीन नामक एक मुसलमान युवक छुरा छिपाए हुए दुकान के भीतर आया। क्रूर हत्यारे ने आते ही लेटे हुए महाशय राजपाल जी के सीने में दोधारी छुरा घोंप दिया। वीर राजपाल जी का तत्काल प्राणान्त हो गया। हत्यारा अपनी जान बचाने के लिए बाहर भागा। महाशय जी का कर्मचारी भी शोर मचाता हुआ उसके पीछे दौड़ा। क्रूर हत्यारा भागकर महाशय सीताराम जी के लकड़ीटाल में जा घुसा। सीताराम जी के नवयुवक साहसी सपूत विद्यारत्न जी ने हत्यारे को कसकर अपनी भुजाओं में पकड़ लिया। इतिहास ने अपने आपको आज पुनः दोहराया। दिल्ली में अब्दुल रशीद ने वयोवृद्ध रुग्ण संन्यासी श्रद्धानन्द पर तीन गोलियाँ चलाकर भागने का प्रयत्न किया तो वीर धर्मपाल विद्यालंकार ने वहीं उसको धर दबोचा था जब तक पुलिस ने आकर उसको बन्दी न बना लिया।

अंतिम यात्रा :-

महाशय जी का पोस्टमार्टम तो उसी सायंकाल हो गया था परन्तु लाहौर के हिन्दुओं ने यह निर्णय लिया था कि अगले दिन हुतात्मा की शवयात्रा धूमधाम से निकाली जाए। पुलिस के मुसलमान अधिकारियों ने राज्याधिकारियों के मन में निराधार भय का भूत बिठा दिया कि यदि शवयात्रा निकली तो शहर में दंगा-फसाद हो जाएगा। डिप्टी कमिश्नर ने रातों-रात लाहौर में धारा १४४लगाकर सरकारी अनुमति के बिना जलसे-जुलूसों पर प्रतिबन्ध लगा दिया।

शवयात्रा कैसी थी –

महाशय जी के बलिदान से आर्य हिन्दू-जाति में ऐसा जोश पैदा हुआ जो देखते ही बनता था। शवयात्रा के समय यह जोश देखकर सब में उत्साह का संचार हो रहा था। अनुमान लगाया गया कि पच्सीस हजार लोग शव-यात्रा में सम्मिलित होकर शमशान-भूमि पहुंचे थे। हिन्दुओं ने बड़ी श्रद्धा से अपने मकानों की छतों से हुतात्मा के शव पर पुष्प-वर्षा की।

पंजाब के सुप्रसिद्ध पत्रकार व कवि, महाशय नानकचन्द जी नाज ने तब एक कविता लिखी थी जिसकी ये पंक्तियाँ उस समय के जोश का यथार्थ चित्रण करती है :

फख से सर ऊँचे आस्माँ तक हो गए,
हिन्दुओं ने जब तेरी अर्थी उठाई राजपाल।

फूल बरसाए शहीदों ने तेरी अर्थी पै खूब,
देवताओं ने तेरी जय जय बुलाई राजपाल।

हो हर एक हिन्दू को तेरी ही तरह दुनिया नसीब,
जिस तरह तूने छुरी सीने पै खाई राजपाल।

तेरे कातिल पर न क्यों इस्लाम भेजे लानतें,
जब मुजम्मत कर रही है इक खुदाई राजपाल।

मैंने क्या देखा कि लाखों राजपाल उठने लगे,
दोस्तों ने लाश तेरी जब जलाई राजपाल।

पता : राजपाल एण्ड सन्स, १५९०, मदरसा रोड,
कश्मीरी गेट, दिल्ली-११०००६

thearyasamaj.org

गृहस्थी - जो तप और त्याग में संन्यासी से भी बढ़ गया

प्रेरक जीवन

- डॉ. अशोक आर्य

महात्मा हंसराज
(१९ अप्रैल जन्म दिवस)

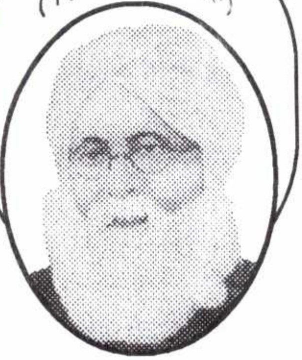

यद्यपि गृहस्थ व संन्यास आश्रम के मध्य आश्रम व्यवस्था के अनुसार एक और आश्रम आता है जिसे वानप्रस्थ कहते हैं। यह वह समय होता है जिसमें अपने शरीर को तपा कर कुन्दन बनाना होता है, किन्तु जब त्याग-मूर्ति महात्मा हंसराज के जीवन को देखते हैं तो ऐसा लगता है कि मानों आश्रम व्यवस्था उलट गयी हो तथा गृहस्थाश्रम ही तप और त्याग के पश्चात् बनने वाला कुन्दन स्वरुप संन्यास आश्रम हो। यद्यपि वह भी कमिश्नर या इसी प्रकार के किसी उच्च पद पर आसीन हो, सुखमय जीवन व्यतीत कर सकते थे, किन्तु ऐसी व्यवस्था में उन्हें याद करने वाला आज कौन होता। वास्तव में उनका इतने योग्य होते हुए भी निर्धन अवस्था में बिताया गया त्यागमय जीवन ही तो हमारे लिए न केवल प्रेरणा-स्रोत ही बना अपितु गृहस्थी होते हुए भी उन्हें संन्यासी का सम्मान प्राप्त हुआ। ऐसा दूसरा उदाहरण मिलना कठिन है। क्या यह कोई कम त्याग है कि अपने जीवन का छब्बीस वर्ष का अमूल्य समय डी.ए.वी. महाविद्याय के अवैतनिक प्राचार्य के रुप में कार्य करना और अपने भोजन के लिए भाई पर आश्रित रहना ? वे अवैतनिक प्रिन्सीपल थे। यदि इस पद का वेतन लिया होता तो आज के हिसाब से लाखों की राशि बनती। कालेज के पेन व कागज का व्यक्तिगत कार्य के लिए उपयोग न करना, उनके तप व त्याग का और भी अधिक ज्वलन्त उदाहरण है। किन्तु इसमें भी आत्म गौरव व अभिमान के स्थान पर अपनी सेवा को मैनेजिंग कमेटी की दया बताना, जैसे कि उन्होने अपने त्याग-पत्र में स्पष्ट किया है, तथा दूसरे के लिए पद रिक्त करना उनकी महानता का अन्यतम परिचायक है। महात्मा जी ने अपने बच्चों को दो पैसे देकर बहलाने को फिजूल खर्ची समझ कर कभी ऐसा न किया कि बच्चों को कुछ पैसे देवें। किन्तु तो भी बच्चों से अगाध, प्रेम रखने का दृश्य है - कि हार्डिंग बम केस में अभियुक्त बने अपने पुत्र बलराज से जब मिलने गए तो ईश्वर के प्रसाद स्वरूप कुछ फल साथ ले गये। महात्मा जी के शिष्यों ने पराधीन भारत की सरकार से ऊंचे-ऊंचे पद भी प्राप्त किए, किन्तु वह महात्मा जी के आदर्शों को नहीं भूले। यही कारण है कि पद की गरिमा को उन्होने चार चांद लगा दिये। कभी रिश्वत इत्यादि लेने को तैयार नहीं हुए। यह भी तो एक आश्चर्य है।

महात्मा जी सादगी में भी अद्वितीय थे। अपना काम अपने हाथों से करना वह पसंद करते थे। इसी कारण कई बार उन्हें पहिचानने में भूल हो जाती थी। एक बार महात्मा जी अपनी बगीची ठीक कर रहे थे कि कोई सज्जन आकर महात्मा जी के बारे में पूछने लगे। महात्मा जी ने उनको बैठने को कहा। थोड़ी देर बाद उस सज्जन ने पुनः महात्मा जी के बारे में जानकारी चाही तो महात्मा जी ने कहा कहिये ! मैं आपके सामने खड़ा हूँ। यह सुनकर वह सज्जन अवाक हो महात्मा जी की सादगी को देखने लगा। महात्मा जी शब्दार्थ नहीं आवश्यक बातों - "आदर्श अध्यापक के गुण , परिश्रम तथा प्रत्येक छोटी बात को समझने के महत्व" को जानते थे। इन्हीं का साक्षात्कार करते हुए जो उत्तमोत्तम शिक्षा का प्रचार व प्रसार वह कर पाए ऐसा अन्यत्र दुर्लभ है वह जानते थे कि प्रत्येक शिक्षा संस्था की आत्मा विद्यार्थी होते हैं। अतः विद्यार्थी का सम्मान करते हुए उनका सर्वांगीण विकास करना तथा उसको उचित सम्मान देना प्रत्येक अध्यापक का आवश्यक कर्त्तव्य होता है। महात्मा जी ने जीवन पर्यन्त इस कर्त्तव्य का पालन करते हुए समाज व राष्ट्र के लिए कर्त्तव्यनिष्ठ नागरिक तैयार करने के लिए विद्यार्थियों में तप, त्याग, कर्त्तव्य पारायणता स्वालम्बन, मितव्ययिता इत्यादि के गुण पैदा किए। महात्मा जी के इस त्याग मय तपस्वी जीवन को देखते हुए यह प्रश्न मन में उठता है कि यदि महात्मा जी गृहस्थी थे तो फिर संन्यासी किसे कहा जाये ? अतः चाहे महात्मा जी ने व्यवहारिक रुप से संन्यास दीक्षा लेने की रूढ़ि को पूर्ण नहीं किया था, किन्तु वास्तव में वह सच्चे अर्थों में संन्यासी थे। ●

पता : आर्य कुटीर, ११६, मित्र विहार, मण्डी डबवाली (हरियाणा) १२५१०४

thearyasamaj.org

परीक्षा में अधिक अंक लाने के उपाय

छात्रों के लिए कुछ स्वर्णिम सूत्र

- स्वामी शान्तानन्द सरस्वती
(एम.ए. दर्शनाचार्य)

परीक्षा हाल में उत्तर कैसे लिखे :-

१. प्रश्न पत्र मिलते ही सबसे पहले सभी प्रश्नों को पढ़ना।
२. सभी प्रश्नों के उत्तर स्मरण हो तो भी अति उत्साह में अथवा अति शीघ्रता में उत्तर न लिखना।
३. किसी प्रश्न का उत्तर स्मरण न हो तो भी दुःखी-हताश-निराश न होना।
४. जिस प्रश्न का उत्तर पूर्णतया याद हो उसे पहले लिखना।
५. जिस प्रश्न का उत्तर भूल रहे हों, अथवा स्मरण न आता हो उसे सोच-सोच कर या याद करते करते लिखन में समय बरबाद न करके उसे सबसे अन्त में लिखे।
६. जिस प्रश्न का उत्तर पूर्ण रुप से याद ही न हो अर्थात उसके विषय में थोड़ा भी याद न हो उसका उत्तर सबसे अन्त में जैसा भी समझ में आये वैसा अवश्य लिखें।
७. कोई भी उत्तर कोरा बिना लिखे मत छोड़े। सभी प्रश्नों को हल करें।
८. हर उत्तर के पूर्ण होने पर उसके नीचे लम्बा अंडर लाइन करें।
९. खाली स्थान भरते हैं तो उत्तर के नीचे (जो भरे हों) अंडर लाइन करें।
१०. वस्तुनिष्ठ उत्तर लिखने में समझदारी करें। जल्दीबाजी न करें या कन्फ्यूजन में सही निशान न लगायें।
११. यदि सात प्रश्न हों और उनमें से कोई पांच उत्तर लिखने को कहा जाय तो जिन पांच प्रश्नों का उत्तर ठीक ठीख आता हो उसे ही लिखना पूरे सात प्रश्नों का उत्तर न लिखना।
१२. प्रत्येक उत्तर को साफ साफ व शुद्ध लिखना।
१३. नकल करके नहीं लिखकर अपने अकल से लिखना।
१४. प्रत्येक उत्तर के समय का विभाजन करके लिखना।
१५. अधिक अंक के उत्तर में अधिक समय लगाना व कम अंक के उत्तर में कम समय लगाना। बड़े उत्तर को कई पैराग्राफ बनाकर लिखना।
१६. कभी भी ऐसा न हो कि किसी प्रश्न का उत्तर याद हो फिर भी समय का अभाव हो जाये और उसे लिख न पायें।
१७. अंत अंत में समय कम पड़ता हो तो लिखने का स्पीड बढ़ा देना।
१८. उत्तर लिखने के काल में उत्तर के अतिरिक्त अन्य किसी विषय में न सोचना।
१९. सभी प्रश्नों का उत्तर लिख लेने के बाद अंत में कापी चेक करना।
२०. कोई उत्तर छूट गया हो या कहीं किसी वाक्य शब्द की कमी रह गयी हो तो उसकी पूर्ति करना अथवा कहीं कोई मात्रा की गलती हो तो उसे सुधार लेना व समय पर कापी अध्यापक को सौंप देना। परीक्षा समाप्ति घंटी के बाद भी लिखते न रहना।

परीक्षा की तैयारी कैसे करें :-

१. सभी विषयों के सभी पाठों की पूरी पूरी तैयारी करना केवल आई.एम.पी. नहीं पढ़ना अपितु कोई भी प्रश्न कहीं से भी आ जाय उसकी तैयारी रहनी चाहिए।
२. जो विषय कठिन हो उसमें अधिक समय लगाना उससे जी मत चुराना।
३. जो पाठ याद किये हों उसे दूसरों को सुनाकर पक्का करना।
४. यो याद किये हों उसे लिखकर भी देखना कहीं कोई मात्रा की गलती या स्पेलिंग मिस्टेक तो नहीं हो रही है।
५. यदि एक माह परीक्षा बची हो तो सभी विषय के लिये समय बांट देना व जिस विषय में परीक्षा के दौरान छुट्टी कम हो उसमें अधिक समय लगाना तथा जिसमें छुट्टी ज्यादा हो उसमें कम समय लगाना।
६. परीक्षा के आसपास के दिनों में खेलकूद, टी.वी., फिल्म, घूमना-फिरना, सैर सपाटा आदि में समय व्यर्थ न गंवाकर पढ़ाई में पूरा जोर लगाना।

पता : वैदिक गुरुकुल आश्रम भवानीपुर,
तह.-अबढासा, जिला-कच्छ (गुजरात)

thearyasamaj.org

आरोग्य जगत्

होमियोपैथी से सम्पूर्ण रोगों का उपचार

- डॉ. विद्याकान्त त्रिवेदी,
होमियोपैथिक चिकित्सक, मोबा. : ९८२६५११९८३, ९४२५५१५३३६

लाईलाज बीमारियों से दर्द मुक्ति पाने के लिए मनुष्य सदियों से प्रयत्नरत है। प्राचीन समय में बीमारियों से छुटकारा पाने के लिए लोग वैद्य-हकीमों, जादूगरों, शौमैनों और पुजारियों की शरण लेते थे। आधुनिक समय में बीमारियों के इलाज के लिए हालांकि अनेक आधुनिक औषधियों, आधुनिक किस्म की सर्जरी और अनेक चिकित्सा विधियों का विकास हो चुका है, लेकिन अक्सर देखा जाता है कि उपचार की ऐलोपैथिक की औषधियाँ एवं आधुनिक चिकित्सा विधियों से बीमारियां दूर होने के बजाय गंभीर होती जाती है और एक स्थिति ऐसी आती है जब दवाईयां और इंजेक्शन निष्प्रभावी हो जाते हैं। कई बार ये दवाईयां खुद मर्ज से कहीं अधिक परेशानी पैदा करती है। इन दवाईयों के दुष्प्रभाव के कारण नयी बीमारियां पैदा हो जाती है। कई बार ऐलोपैथी दवाएं रक्त स्राव अथवा दिमागी दौरे का कारण बन जातीहैं, जिनसे रोगी की मौत तक हो सकती है।

आज जब दर्द निवारक दवाईयों के अंधाधुंध सेवन ने एक महामारी का रुप धारण कर लिया है वैसे में अनेक देशों में होम्योपैथिक चिकित्सा को दर्द निवारण एवं प्रबंधन की कारगर एवं दुष्प्रभाव रहित पद्धति के रुप में लोकप्रियता हासिल हो रही है। कोई भी दर्द लाइलाज नहीं होता है। दर्द शरीर के किसी भाग में उत्पन्न किसी न किसी व्याधि का संकेत होता है और इसलिए दर्द को स्थायी तौर पर जड़ से दूर करने के लिये उस व्याधि या दर्द के कारण को ठीक करना जरुरी है। होम्योपैथिक चिकित्सा मरीज को दर्द से राहत दिलाने के साथ-साथ दर्द के कारण को दूर करती है। इसलिये किसी भी तरह के दर्द और रोग से ग्रस्त मरीज को जल्द से जल्द होम्योपैधिक चिकित्सा की मदद लेनी चाहिए।

हमने यह पाया है कि होम्योपैधिक चिकित्सा दर्द से प्रभावित क्षेत्र की मांसपेशियों को रिलेक्स करने में मदद करती है तथा शरीर में प्राकृतिक दर्द निवारक तत्व के उत्सर्जन को बढ़ाती है। इसके अलावा यह प्रभावित भाग में रक्त प्रवाह को बढ़ाती तथा वहां की स्नायुओं की कार्य क्षमता में सुधार लाती है। इसके परिमाम स्वरुप होम्योपैधिक चिकित्सा दर्द से तत्काल राहत दिलाने के साथ-साथ शरीर की हिलिंग रिस्पौन्स को स्पंदित करती है। डॉ. त्रिवेदी का कहना है कि होम्योपैथिक चिकित्सा को प्रसव पीड़ा को नियंत्रित करने तथा सामान्य प्रसव सुनिस्चित कराने में काफी कारगर पाया गया है। कुछ समय तक होम्योपैथिक चिकित्सा नियमित रुप से लेते रहने पर दर्द धीरे-धीरे कम होता है और कुछ समय बाद दर्द इतना कम या नगण्य हो जाता है कि मरीज को सामान्य जीवन में कोई दिक्कत नहीं होती है।

होम्योपैथिक चिकित्सा के साथ मरीज दर्द से राहत पाने के लिये एक्युप्रेशर, योग एवं ध्यान, रेकी चिकित्सा आदि की भी मदद ले सकता है। होम्योपैथिक चिकित्सा जैसी विभिन्न वैकल्पिक चिकित्सा प्रणालियों की मदद से लाइलाज बीमारियों से पीड़ित मरीजों को किसी दवाई की मदद से बगैर स्थायी तौर पर राहत दिलायी जा सकती है।

होम्योपैथिक चिकित्सा कमर, दर्द, गर्दन दर्द, आथ्रराइटिस, ओस्टियो-अथ्रराइटिस, गठिया, सियाटिका, कैंसर पीड़ा, सिर दर्द, माईग्रेन, इरीटेबल बाउल सिंड्रोम, साइनुसाइटिस, डिस्क समस्या, पेटदर्द, हर्पिज, न्यूरोल्जिया और डायबेटिक न्यूरोपैथी जैसे किसी भी तरह के दर्द का सफलतापूर्वक निवारण हो सकता है। इसके अलावा हाल के वर्षों में होम्योपैथिक चिकित्सा को कैंसर रोगियों को कष्टों से निजात दिलाने की एक महत्वपूर्ण तरकीब के रुप में माना जाने लगा है। मौजूदा समय में होम्योपैथिक चिकित्सा एक सम्पूर्ण चिकित्सा पद्धति के रुप में विकसित हुआ है।

**पता : त्रिवेदी होमियो औषधालय, टाटीबन्ध,
रायपुर ४९२००१ (छ.ग.)**

thearyasamaj.org

ग्राम मरौद में वैदिक यज्ञ, लोकार्पण समारोह एवं सांस्कृतिक कार्यक्रम सोल्लास सम्पन्न

मरौद (धमतरी)। आर्यसमाज बैजनाथ पारा रायपुर के सौजन्य से एवं आर्यसमाज बैजनाथपारा रायपुर द्वारा संचालित श्रीमती जानकीदेवी आर्य विद्यालय मरौद के प्रांगण में दिनांक २० से २२ मार्च २०१५ तक त्रि-दिवसीय वैदिक यज्ञ, भजन संगीत एवं प्रवचन का कार्यक्रम आयोजित किया गया। कार्यक्रम उद्घाटन वैदिक यज्ञ के साथ हुआ। कार्यक्रम के मुख्य अतिथि आचार्य अंशुदेव आर्य (सभा प्रधान, छ.ग. प्रांतीय आर्य प्रतिनिधि सभा), सभा के उपप्रधान श्री सोमप्रकाश गिरी (भू.पू. विधायक मरौद) एवं सभा मंत्री श्री दीनानाथ वर्मा एवं गणमान्य नागरिकों की गरिमामयी उपस्थिति में हुआ। इस अवसर पर दिनांक २१ मार्च २०१५ को श्रीमती जानकी देवी आर्य विद्यालय मरौद के नवनिर्मित भवन का लोकार्पण हुआ, जिसके मुख्य अतिथि माननीय श्री अजय चन्द्राकर (मंत्री, पंचायत एवं सांस्कृतिक विभाग छ.ग. शासन) रायपुर एवं सभा के समस्त पदाधिकारियों एवं ग्राम मरौद के हजारों ग्रामीण जनों की गरिमामयी उपस्थिति सम्पन्न हुआ। समापन दिवस एवं पूर्णाहुति दिनांक २२-३-२०१५ को वैदिक यज्ञ, भजन संगीत, प्रवचन एवं विद्यालय के छात्र-छात्राओं द्वारा सांस्कृतिक कार्यक्रम हर्षोल्लास के साथ सम्पन्न हुआ।

गुरुकुल आश्रम आमसेना का ४८वाँ वार्षिकोत्सव सम्पन्न

आमसेना (ओड़िशा)। ओड़िशा में आर्यों के प्रसिद्ध तीर्थ स्थल गुरुकुल आश्रम आमसेना के ४८वें वार्षिकोत्सव महोत्सव पर दो होनहार युवक ब्रह्मचारी अंकित कुमार एवं ब्रह्मचारी महीधर आर्य ने नैष्ठिक ब्रह्मचर्य की दीक्षा लेकर अपना जीवन देश धर्म के लिए समर्पित किया तथा श्री स्वर्गीय चौ. मित्रसेन जी आर्य की पुण्य स्मृति में पूज्य स्वामी सुधानन्द जी सरस्वती, पूज्य डॉ. ब्रह्ममुनि जी वानप्रस्थी (महा.), महात्मा चैतन्यमुनि जी (हि.प्र.) का सम्मान २१ हजार रु. की राशि शाल, श्रीफल एवं अभिनन्दन पत्र के साथ किया गया। इसी क्रम में ३० वानप्रस्थियों एवं १६ आर्य वृद्धों तथा गुरुकुलों में दीक्षित ब्रह्मचारियों के माता-पिता का सम्मान भी किया गया। महोत्सव का शुभारम्भ अथर्ववेद पारायण महायज्ञ तथा ओ३म् पताकोत्तोलन के साथ हुआ। खरियार रोड नगर में भव्य शोभा यात्रा भी निकाली गई।

इसी अवसर पर आर्य जगत् के उच्चकोटि के विद्वानों के उद्‌बोधन के साथ महोत्सव सम्पन्न हुआ। इस अवसर पर केन्द्रीय ग्रामीण विकास राज्य मंत्री श्री सुदर्शन भगत जी एवं स्थानीय विधायक श्री बसंतभाई पण्डा जी भी महोत्सव में जनता को सम्बोधित करने एवं आशीर्वाद देने के लिए पधारे थे। *संवाददाता : डॉ. कुञ्जदेव मनीषी, आचार्य गुरुकुल आश्रम आमसेना (ओड़िशा)*

निर्वाचन सम्पन्न

बाल्कोनगर (कोरबा)। आर्यसमाज बाल्को नगर कोरबा (छ.ग.) का वार्षिक निर्वाचन सम्पन्न हुआ। जिसमें प्रधान-श्री गोपीराम साहू, उपप्रधान - श्रीमती सुमन आर्या, मंत्री - श्री देवनाथ, उपमंत्री - श्रीमती गीता देवांगन, कोषाध्यक्ष - श्री बालमुकुन्द चन्द्रा, पुस्तकाध्यक्ष - श्री नेतराम चौहान निर्वाचित हुये। समस्त पदाधिकारियों को हार्दिक बधाई एवं शुभकामनायें।

प्रधान, गोपीराम साहू को पितृ शोक

बाल्कोनगर (कोरबा)। ग्राम कोसला जिला जांजगीर (छ.ग.) के वयोवृद्ध प्रतिष्ठित नागरिक एवं आर्यसमाज बाल्को नगर कोरबा के प्रधान श्री गोपीराम साहू के पिता श्री मोहितराम साहू जी का निधन हृदयगति रुक जाने से ९२ वर्ष की उम्र में हो गया। छत्तीसगढ़ प्रान्तीय आर्य प्रतिनिधि सभा की ओर से मृतक आत्मा की सद्‌गति के लिए ईश्वर से प्रार्थना एवं श्रद्धांजलि अर्पित करता है।

thearyasamaj.org

महात्मा चैतन्यमुनि जी भुवनेश्वर (ओड़िशा) में 'महर्षि दयानन्द सरस्वती सम्मान' से सम्मानित

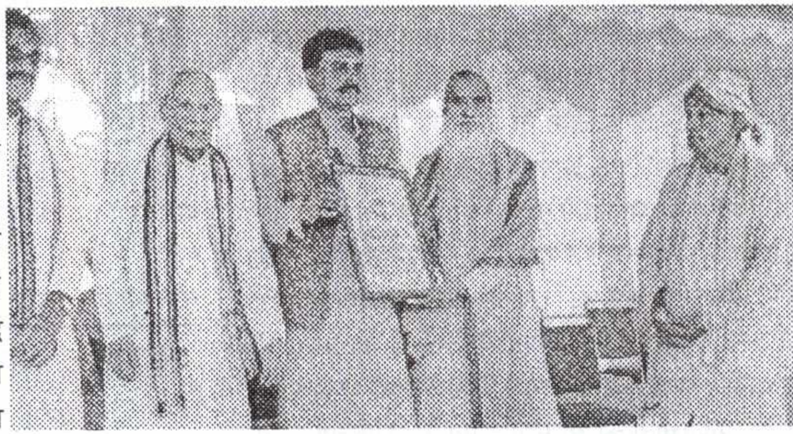

भुवनेश्वर (ओड़िशा)। आर्य जगत् के वरिष्ठ साहित्यकार एवं वैदिक प्रवक्ता व आनन्दधाम आश्रम, उधमपुर, जम्मू कश्मीर के मुख्य संरक्षक व निदेशक तथा अनेक आश्रमों, साहित्यिक संस्थाओं के संचालक एवं संरक्षक महात्मा चैतन्यमुनि जी को भुवनेश्वर ओड़िशा में महर्षि दयानन्द सरस्वती सम्मान से सम्मानित किया गया। उन्हें यह सम्मान लाला लाजपतराय जी द्वारा स्थापित लोकसेवक मण्डल के राष्ट्रीय सचिव श्री दीपक मालव्यजी द्वारा प्रदान किया गया। हिमाचल प्रदेश आर्य प्रतिनिधि सभा के आर्यवीर संचालक, वेद प्रचार अधिष्ठाता, महामन्त्री तथा वरिष्ठ उपाध्यक्ष व कार्यकारी अध्यक्ष के रुप में इन्होंने अभूतपूर्व सेवा की है, जिसके लिए इन्हें सभा की ओर से सम्मानित भी किया गया था। इन्होंने वैदिक वशिष्ठ पत्रिका, शब्द, नवनीत भारती तथा गूंजती घाटियाँ आदि पत्रिकाओं में भी सम्पादन सहयोग प्रदान किया है।ये एक प्रतिष्ठित लेखक ही नहीं बल्कि प्रबुद्ध वैदिक प्रवक्ता भी हैं, जिन्होंने मानव मूल्यों की स्थापना हेतु देश-विदेश में वैदिक संस्कृति की सार्वभौमिक विचारधारा को अत्यधिक प्रभावशाली ढंग से प्रचारित एवं प्रसारित किया है। ***संवाददाता : प्रबन्धक एवं प्रेस सचिव, वैदिक वशिष्ट आश्रम, महादेव, सुन्दरनगर, जिला-मण्डी (हि.प्र.)***

महाशय धर्मपाल जी का 92वां जन्मोत्सव समारोह सम्पन्न

दिल्ली। महाशय धर्मपाल (एम.डी.एच. मसाला) का ९२वाँ जन्मोत्सव समारोह अत्यन्त धूमधाम के साथ सीरीफोर्ट सभागार नई दिल्ली में दिनांक २७ मार्च २०१५ को सम्पन्न हुआ। जिसमें सभा प्रधान एवं मंत्री आमंत्रित एवं उपस्थित रहे। महाशय धर्मपाल कृतित्व एवं व्यक्तित्व विषय पर अनेक आर्य महानुभावों ने अपने विचार रखे। उपस्थित अपार जनसमूह ने **वैदिक परम्परा - जीवेम् शरदः शतम् - भूयश्च शरदः शतात्** के अनुसार अपनी शुभकामनायें दिये। स्टेडियम में भव्य सांस्कृतिक कार्यक्रम का आयोजन अत्यन्त सराहनीय रहा। पाकिस्तान से विस्थापित होकर भारत में शरण लेने वाले महाशय धर्मपाल दिल्ली की गलियों में टांगा चलाकर जीवन यापन प्रारम्भ किये। पाकिस्तान में अपने पुस्तैनी धंधा मसाला उद्योग को भारत में आकर दिल्ली में प्रारम्भ किया, तब उनके पास पूंजी के नाम पर केवल एक टांगा ही था, जिसे बेचकर उद्योग प्रारंभ किया गया। परमात्मा की कृपा एवं महाशय जी के सात्विक पुरुषार्थ से विभिन्न प्रकल्पों को दान द्वारा खड़ा किया गया है, जिसकी सूची बहुत लम्बी है। उपस्थित जनसमुदाय ने महाशय जी के २०० वर्षों से अधिक स्वस्थ जीवन की मंगल कामना किये।

- मंत्री जी, दिल्ली से लौटकर

thearyasamaj.org

गुरुकुल हरिपुर द्वारा दान सहायता शिविर एवं वेद प्रचार कार्यक्रम सम्पन्न

हरिपुर (ओड़िशा)। ओड़िशा के कोरापुट जिला गो हत्या एवं गो मांस खाने के नाम से तथा गरीबी के कारण प्रसिद्ध है। जिसका लाभ विभिन्न मत-सम्प्रदाय वाले थोड़े से प्रलोभन देकर अपना-अपना मत सम्प्रदाय के विस्तार में लगे हुये हैं। अतः यहां के लोग गो माता की महत्ता को समझें, मानवीय कर्त्तव्यों तथा आर्यसमाज के सिद्धान्तों से परिचित होवें, इसी पावन भावना से गुरुकुल हरिपुर जुनवानी ओड़िशा के तत्वावधान में २७, २८ फरवरी २०१५ को नवरंगपुर जिला के नुआपाड़ा एवं कोरापुट जिला के बाइलगुड़ा व अण्डारगुड़ा को केन्द्र बनाकर दान सहायत शिविर एवं वेद प्रचार का कार्यक्रम सुम्पन्न हुआ। जिसमें विभिन्न गांवों दो हजार से अधिक महानुभावों को आर्यसमाज एवं वेद से परिचय कराया गया, १० परिवारों को वैदिक धर्म में दीक्षित कराया गया, सैकड़ों महानुभावों को यज्ञ में आहुति प्रदान कर मांस, मदिरा आदि अक्षभ्य पदार्थों का सेवन नहीं करने का व्रत दिलाया गया, तीनों केन्द्रों में यज्ञ एवं वेद प्रवचन कार्यक्रम के उपरान्त छः सौ निर्धन परिवारों को २५-२५ किलो चावल एवं एक-एक साड़ी दान स्वरुप प्रदान किया गया।

यह समस्त कार्यक्रम गुरुकुल हरिपुर के संचालन डॉ. सुदर्शनदेव आचार्य के मार्गदर्शन व प्रेरणा से श्री विजय कुमार लाहोटी रायपुर, समाजसेवी श्री सोमनाथ पात्र बालेश्वर की पावन उपस्थिति में गुरुकुल के प्रबन्धक श्री धर्मराज पुरुषार्थी, श्री ताराकान्त प्रधान, श्री आनन्द भोई, श्री पुरुषोत्तम आर्य प्रचारक कालाहाण्डी, गुरुकुल कुन्दुली के आचार्य श्री विनय कुमार वैदिक, सेमलीगुड़ा आर्यसमाज के कर्णदार श्री चन्दन कुमार साहू, श्री कार्तिक वानप्रस्थी, श्री मस्तराम वानप्रस्थी तथा स्थानीय सेवाभावी महानुभावों से सुसम्पन्न हुआ।

संवाददाता : दिलीप कुमार जिज्ञासु, आचार्य गुरुकुल हरिपुर

सामवेद पारायण महायज्ञ सम्पन्न

छाल। डीएव्ही पब्लिक स्कूल एसईसीएल में नवसत्र का प्रारंभ २० से २३ मार्च तक आयोजित त्रिदिवसीय सामवेद पारायण महायज्ञ के साथ हुआ। शाला प्रांगण में आयोजित सामवेद पारायण महायज्ञ के १८७५ मंत्रों पर आहुतियां दी गई। इस महायज्ञ का समापन छाल क्षेत्र के सभी निवासियों के अच्छे स्वास्थ्य, बुद्धि, उन्नति, सुख एवं समृद्धि की कामना करते हुए प्राचार्य एल.के. पाढ़ी के नेतृत्व में शाला परिवार के सदस्यों सहित उपस्थित जनसमूह द्वारा पूर्णाहुति दी गई। ***संवाददाता : अजय शर्मा, छाल***

अग्निदूत के ग्राहक सदस्यों की सेवा में

छत्तीसगढ़ प्रान्तीय आर्य प्रतिनिधि सभा के मासिक मुख पत्र **'अग्निदूत'** के समस्त ग्राहक सदस्यों से निवेदन है कि अपना वार्षिक शुल्क १००/- यथाशीघ्र सभा कार्यालय को भेज दें, जिससे कि उन्हें नियमित रूप से 'अग्निदूत' भेजा जाता रहे। जिन सदस्यों के शुल्क तीन वर्षों से अधिक बकाया हो, उनसे निवेदन है कि वे अपना दसवर्षीय शुल्क ८००/- रु. भेजें। इस कार्य को यथाशीघ्र प्राथमिकता से करें। अन्यथा **इस मास से अग्निदूत भेजना बंद कर दिया जायेगा।** पत्र व्यवहार में अपना सदस्य संख्या तथा पूरा पता पिन कोड सहित अवश्य लिखें। **सभा का भारतीय स्टेट बैंक दुर्ग शाखा में सेविंग एकाऊन्ट नं. : 32914130515 है, जिसमें आप किसी भी भारतीय स्टेट बैंक की शाखा से आनलाईन शुल्क जमा कर सभा कार्यालय के दूरभाष नं. ०७८८-२३२२२२५ द्वारा सूचित करते हुए अलग से पत्र लिखकर अवगत कर सकते हैं।**

अग्निदूत मासिक पत्रिका के सम्बन्ध में कोई भी शिकायत हो तो कृपया श्रीनारायण कौशिक को चलभाष नं. ९७७०३६८६१३ में सम्पर्क कर सकते हैं। **- दीनानाथ वर्मा, मंत्री** मो. ९८२६३६३५७८

कार्यालय पता : 'अग्निदूत', दयानन्द परिसर, आर्यनगर, दुर्ग (छ.ग.) 491001, फोन : ०७८८-२३२२२२५

thearyasamaj.org

आर्यसमाज गोंड़पारा बिलासपुर में सोल्लास सम्पन्न

आर्यसमाज स्थापना दिवस एवं रामनवमीं की झलकियाँ

thearyasamaj.org

अप्रैल 2015
डाक पंजी. छ.ग./ दुर्ग संभाग / 99 / 2015-17
CHH-HIN/2006/17407

(छपी सामग्री प्रिन्टेड बुक)

सेवा में,

श्रीमान्

प्रेषक :
अग्निदूत, हिन्दी मासिक पत्रिका
कार्यालय, छ.ग.प्रान्तीय आर्य प्रतिनिधि सभा, दयानन्द परिसर,
आर्यनगर, दुर्ग –491001 (छ.ग.)

महाशय धर्मपाल (एम.डी.एच. मसाला) के 92वाँ जन्म दिवस के अवसर पर
वैदिक यज्ञ करते हुए महाशय धर्मपाल, सभा प्रधान एवं अन्य गणमान्य महानुभाव

सम्पादक प्रकाशक मुद्रक आचार्य अंशुदेव आर्य द्वारा उषा प्रिंटर्स, मॉडल टाऊन, भिलाई से छपवाकर
छत्तीसगढ़ प्रान्तीय आर्य प्रतिनिधि सभा, दयानन्द परिसर, आर्यनगर, दुर्ग से प्रकाशित किया गया.